वर्त्तमान पारिवारिक समस्या मे ओझरायल एखुनका बेरोजगार युवक आ युवतीक उमड़ल दर्द दर्सावैत अछि मैथिली पारिवारिक नाटक

कलह

लेखक :

आनन्द कुमार झा

प्रकाशक :

श्री काली कान्त झा

प्रकाशक :
श्री काली कान्त झा
ग्रा०-पो० : मेंहथ
भाया : झंझारपुर
जिला - मधुबनी (बिहार)
पिन ८४७४०४

●

●

जनवरी 2001

●

प्रथम संस्करण : ११०० प्रति

●

मूल्य : 30/- टाका

●

मुद्रक :
श्री गणपति प्रेस
36D, बेथुन रो,
कलकत्ता-700 006
फोन : 219-1110/3963

KALAH
A MAITHILI DRAMA WRITTEN by ANAND KUMAR JHA

दुइ-शब्द

ओना तऽ कम्पूटरक युग चलि रहल अछि, जाहि मे बेरोजगारी एकटा आम बात छी । किन्चिते एहन कुनू परिवार होयत जाहि मे दू-चारिटा बेरोजगार युवक नहिं होयत । फेर नवयुवतीक बेरोजगारीक बात केनाई तऽ बसक बाहरक बात छी । दिनो पर दिन इ जे एकटा विकट आ विकराल रूप पकड़ैत जा रहल अछि - निदान एकटा जटिल समस्या बनल जा रहल अछि । एखन आर्थिक युग से चलि रहल अछि—जाहि मे अर्थक उपार्जन परम आवश्यक अछि । एही मे विघ्नता भेल बस शुरु भऽ जाइत अछि नाना-प्रकारक पारिवारिक समस्या कारण एखुनका परिवार मे प्राथमिकता ओकरे देल जाइत अछि जे अर्थक उपार्जन करैत अछि ओकर लोक-बेद, बाल-बच्चा पर किछु विशेषे ध्यान देल जाइत अछि दोसराक अपेक्षा । सम्मिलित परिवार मे कल्पनाकें एखन अधिकतर देखल - चिन्हल जा सकैत अछि - ई स्त्री-बाल-बच्चा ककर छी । कमौआक छोट सँऽ छोट समस्या जटिल समस्याक रूप देल जाइत देखल जाइत अछि । ओतहि दोसरक नम्हर सँ नम्हर समस्या कें दबा कऽ राखल जाइत अछि वा स्वयं दबबैत रहैत अछि - किएक तऽ बुझैत अछि अपन आर्थिक परेशानी कें जखन की इ बुझैत परिवार मे अर्थक उपार्जनक सीमा कतेक अछि । ई सब घटना घटैत-घटैत अन्तोगत्वा **''कलह''** के रूप धारण करैत अछि । जाहि मे फँसि कोल्हू जँका पिसाइत अछि एखुनका युवक आ युवती । प्रस्तुत नाटक ''कलह'' जकर नायक आकाश सेहो किछु एहने समस्यांक जाल में फँसल अछि । जकर निदानक पूर्ण प्रयासक बादहुँ असफल होइत अछि । अन्तिम परिणामक बात जँ करी तऽ - एहि जाल सँ नहियें निकलि पबैत अछि

- अपन संग-संग निरपराध अर्द्धांगिनी आरती के सेहो सनैत प्राणान्त करैत अछि ।

नाटक के किछु विचित्र तरहें कल्पना कए चित्रण करैक प्रखर प्रयास केलहुँ हें एहि मे कतय तक सफल छी - पोथी अहाँक हाथ में अछि निर्णय कए सकैत छी । आशा तऽ निश्चित रखैत छी हमर इ रचना अवश्य पसिन्न आयत । पोथी विमोचन होयबा तक अनेक विद्वान लोकनिक संग-संग बन्धु-बान्धवक असीम प्रेम सराहनीय सहयोग भेटल जकरा कहियो नहि बिसरब । विशेष कऽ कलकत्ताक लेखक एवं निर्देशक श्री शम्भुनाथ मिश्रजी एवं निर्देशक श्री गंगा झाजी, विशिष्ट रंगकर्मी श्री भवनाथ झाजी, श्री नवोनारायण मिश्रजी, आओर माननीय श्री किशोरीकान्त मिश्रजी जे अपन अति व्यस्तताक उपरान्तो सहयोग आ सलाह देलन्हि, जकर उद्गम रूप छी ई पोथी । पूज्यवर बाबूजी आ पूज्यनीया मायक त्याग आ तपस्या जे हमरा एहि लक्ष्य तक पहुँचेलक जाहि लेल हम हुनका सबहक टोहरा ऋणी रहब । तऽ आऊ नाटक ''**कलह**'' कें पोथीक रूप कीनू, पढ़ू, आ मंचन करू । संगहि उठाऊ कलम लिख बैसू पत्र केहन लागल ई रचना । तऽ हम अहाँक पत्रक कौतूहलता सँऽ कए रहल छी प्रतीक्षा । हाँ मंचन जँऽ करी तऽ समय रहैत खबरि करब - पूर्ण प्रयास रहत उपस्थित रहबाक । एक बेर फेर अहाँ सबहक स्नेह आ आशीर्वादक आशा रखैत हम अहींक अपन लेखक—

—आनन्द कुमार झा

दृष्टान्त

नाटक - समाजक एकटा विशाल दर्पण थीक । जखन-जखन कोनो नाट्यकारक कलम उठैत अछि, तखन-तखन समाजक विभिन्न वर्गक, विभिन्न व्यक्तिक, विभिन्न प्रकारक नुकायल एवं नकावग्रसित चरित्रक पर्दाफाश होइत अछि । संगहि नाना प्रकारक ओझरायल-सोझरायल समस्या, सुख-दुःख, कलह-अशान्ति, माया-मोहक ताण्डव नृत्य करैत मनुक्खक दृश्य दर्शकक निर्दोष एवं निश्छल ह्रदय कें बरबस झखझोरि दैत अछि ।

काल्पनिक घटनाक्रम रहितहुँ पाठक वा दर्शकक निर्मल मोन कें एकटा नाटक कखनहुँ रोमांचित तऽ कखनहुँ उत्तेजित कऽ दैत अछि । हजार-हजार दर्शक बृन्द कें एक संगे समेटि समाज मे बढ़ैत अन्याय-अत्याचारक विरोध मे एकटा क्रान्तिक भयंकर निनाद करैत अछि नाटक ।

नाटकक उद्देश्य मात्र जनताक मनोरंजन वा रंगकर्मीक कला-कौतूकताक विषय वस्त नहिं । इ तऽ एकटा एहन अमोघ शक्ति थीक जे काज तीर-तलवार, वाँ बन्दूक-तोप सँ सम्भव नहिं भऽ सकैत अछि से एकटा सशक्त रचनाकारक नाटकक - राष्ट्रक समस्त गुमराह एवं दिग्भ्रमित जन-मानस कें नव चेतना प्रदान कऽ जागृति करैत अछि । समाजक कुरीति, शोषण, भ्रष्टाचार, अराजकता, अशिक्षा एवं अंधविश्वासक गहन अंधकार सँ मनुष्य कें मुक्त कऽ शिक्षाक उज्ज्वल एवं प्रखर प्रकाश मे आनि सचेतनशील एवं स्वावलम्ब बनबैत अछि नाटक ।

अही विषय-वस्तु सँऽ सन्दर्भित अछि ई मैथिली नाटक - ''**कलह**'', युवा लेखक श्री आनन्दकुमार झाजी अपन तीक्ष्ण कलमक नोंक सँ पारिवारिक एवं सामाजिक चिर काल सँ होइत 'कलह' रूपी महादानव के सर्वदाक हेतु समाप्त करबाक अथक एवं दृढ़ संकल्पित प्रयास कयलन्हि अछि ।

नाटकक प्रत्येक दृश्य दर्शक कें जिज्ञासु एवं कौतूहल करैत अछि । लेखक - ग्रामीण वातावरण कें संयोजित कए, नाटकक दृश्यांकन आओर कथोपकथन उत्कृष्ट एवं सराहनीय लिखलन्हि अछि । भविष्य मे हिनका सनक मेधावी नाट्यकार सँऽ मैथिली रंग-मंच कें अनेकानेक आकांक्षा एवं स्वप्न साकार होयबाक सम्भावना थीक ।

अपितु ''कलह'' नाटक कलह सँऽ आरम्भ होइत अछि आओर

कलहक मुख्य कारण थीक - आर्थिक विपन्नता, बेरोजगारीक निउल्लापन एवं दुष्ट कलुपित नारीक कुठाराघात क्रमशः प्रत्येक दृश्यक संग कलहक कर्कशता किलोल करैत नाटकक नायक (आकाश) नायिका (आरती) कें धैर्यविहीन कऽ दैत अछि । नाटकक अंतिम चरण दुःखक प्रलयंकारी बाढ़ि गगनचुम्भी हिलकोर मारैत - दर्शक कें क्षुब्ध कऽ दैत अछि । वर्त्तमान सामयिक नाटकक कथा मे सर्वथा नायक एवं नायिकाक हृदयविदारक दृश्य नहि देखल जाइछ ।

प्रगतिवादी युगक प्रगतिशील पटभूमि पर कदाचित एहन दर्दनाक एवं संवेदनशील दृश्य एकटा चुनौतीपूर्ण विषय थीक ।

लेखक - वर्त्तमान मिथिलांचलक युवा-युवतीक दुर्दशा कें जिम्मेदार - मिथिलाक कलुषित राजनीति, वैचारिक अशिक्षा एवं बेरोजगारक समस्या कें ठहरयलन्हि अछि ।

अही उपरोक्त चपेट मे सुरेश्वर बाबूक एकटा चिक्कन परिवार-नस्तनाबूत भऽ जाइत अछि । बेकारीक समस्याक संग-संग हुनक दोसर पत्नी यानि आकाशक नरपिशाचिन सतमाय अपन कोखिक संतान राजीवक प्रति विशेष स्वार्थ एवं लोलुपतावश आकाश आओर ओकर पत्नी आरतीकें ऊपर अतिशय अत्याचार करक लेल बाध्य भऽ जाइत अछि । आओर एकदिन समयक एहन प्रचण्ड प्रहार लगैत अछि कि नायक-नायिका दुनूक जीवन लीला क्रमशः नष्ट भऽ जाइत अछि । मंत्र-मुग्ध दर्शकक भीजल नयन मे एकटा निराशाक प्रतिबिम्ब परिलक्षित होइत अछि । परञ्च नेपथ्य सँऽ एकैसम सदीकें नवजात शिशु-नायकक प्रादुर्भावक क्रन्दन दुखित दर्शकक मुद्रा कें भंग करैत अछि एवं सम्पूर्ण मानव जातिक अत्याचार अशिक्षाक विरोध आवाज उठयबाक संकेत करैत अछि । संकेत करैत अछि एकटा महान ऐतिहासिक क्रान्तिक ! संकेत करैत अछि कलहविहीन एकटा ऐश्वर्यमय, सृजनात्मक नव ज्योतिर्मय नव सृष्टिक ! संकेत करैत अछि -

''शोषण नहिं, क्रांति चाही ।
कलह नहिं, शांति चाही ।।
अवसान नहिं, उत्थान चाही ।
अभिशाप नहिं, वरदान चाही ।।

शम्भुनाथ मिश्र
निर्देशक झंकार, कलकत्ता

पहिल मंचन

द्वारा : **युवा नाट्य कला परिषद, मेंहथ**
सौजन्य सँ : **पार्थिव शिवपूजन महोत्सव-1997**
स्थान : **हरहर महादेव प्रांगण, मेंहथ**
दिनांक : **10-11-1997**

पुरुष पात्र	**भूमिका**	**कलाकार**
1. सुरेश्वर बाबू	(आकाशक बुजुर्ग पिता)	श्री कालीकान्त झा
2. आकाश	(सुरेश्वरक पहिल पत्नीक बेटा)	लेखक स्वयं
3. राजीव	(सुरेश्वरक दोसर पत्नीक बेटा)	श्री दिलीप कुमार झा
4. लुटन काका	(आकाश एवं राजीवक पित्ती)	श्री श्रवण झा
5. चुनमुन	(राजीवक सार)	श्री दयानंद झा
6. योगेश	(आकाशक अंतरंग मित्र)	श्री संतोष कुमार
7. डाक्टर		श्री सुरेश झा

स्त्री पात्र	**भूमिका**	**कलाकार**
1. सुमित्रा	(सुरेश्वर बाबूक पत्नी)	श्री मुकेश कुमार
2. आरती	(आकाशक पत्नी)	श्री विक्रम कुमार झा
3. कोमल	(राजीवक आधुनिक विचारधाराक पत्नी)	श्री वीरेन्द्र कुमार

अन्य पात्र : नर्स, अस्पतालक कर्मचारी, जनमौती बच्चा, गौआ-घरूआ, इत्यादि ।
कलाकार : नन्द जी झा, अनिल कुमार, त्रिलोक कुमार झा संग में अमरेन्द्र कुमार झा ।
पूर्ण सहयोग : श्री सचिन्द्र कुमार झा (फूलबाबू)
सलाहकार : श्री मंगनू झा, राघव झा
मंच व्यवस्था : श्री जयराम ठाकुर, श्री भिखारी पासवान
रूप सज्जा : श्री जगमोहन झा
प्रकाश व्यवस्था : श्री मनोज पासवान
संगीत : विनय अकेला एण्ड ग्रुप
मुख्य अतिथि : **श्री देवचन्द्र झा** (भू० पू० विधायक, झंझारपुर)

लेखक एवं निर्देशक : आनन्द कुमार झा

अंक : प्रथम — दृश्य : पहिल

[स्थान : आकाशक विश्राम गृह । आरती सजाउल पलंग पर गेरूआक सहारा लएकऽ पड़ल अछि । किछु कालक बाद टेबुल पर सँ रेडियो लए खोलैत अछि, तखनहिं तमसायल मुद्रा मे सुमित्राक प्रवेश होइत अछि । आरती देखि रेडियो बन्न कए पलंग सँ उठैत अछि ।]

सुमित्रा : नहिं जानि ई अगलगोनियाँ कतएह सँ हमरे घर मे आगि लगबैक लेल बथा गेल ।

आरती : माय एखन हमर कोन दोष अछि ? हम की केलियैन्ह एखन ? सदिखन किएक हमरा एतेक ईर्ष्या भाव सँ देखैत छथि ?

सुमित्रा : सुनू आब पदमिनीक बात सब । सबहक आंगन मे कखन-कहाँ भानस-भात भए उतरि गेल आ हमरा आंगनक मे ! हमरा आंगन मे एखन तक चुल्हो मे नहिं ऊक पड़ल हें । भरि दिन-राति रेडियो कान तर पाथि परल रहत । जेना केहन ललबबुआक घरवाली रहए ।

आरती : माँजी काजक काल मे तऽ सब काज हम करिते छियैन्ह। एतेक किएक हमरा टिकली पर नचेने छथि ।

सुमित्रा : सुनि लियौक हम टिकली पर नचबैत छी एकरा । देखू अलच्छी जनमलि के कतेक झूठ बजैत अछि । एकटा जोड़ला खर पर हाथ नहिं लगबैत अछि आ कहैत अछि काजक काल मे तऽ सबटा काज हमं करिते छियैन्हि । माययो एकर एहने हएत ।

आरती : हे सुनिलाउथ हमरा जतेक गाड़ि-मारि करबाक छन्हि करथु,

हम सबटा सहिलेबैन्हि, मगर हमरा माय कें गाड़ि देतीह इ बात हम बर्दास्त नहिं करबैन्ह ।

सुमित्रा : ओ तऽ इ मौगीया आब हमरा मारत ।

आरती : माय किएक हमरा बदनाम बनबैत छथि, हम किएक हिनका मारबन्हि.........

[तखनहिं सुरेश्वर बाबूक प्रवेश । आरती घोघ तानि थोरे अढ़ होइत अछि ।]

सुरेश्वर : बाप रे बाप ! दरबज्जा पर बैसनाई मुश्किल भए गेल एकरा सबहक कारणे ।

सुमित्रा : एहि घर में आजुका बाद हमहीं रहबैक की ई अगलगोनियाँ मौगीये रहतैक । आई ई फैसला एकरा करैएटा पड़तैक ।

सुरेश्वर : अहूँ बड़ उत्फाल रहैत छी, कने शांत रहू । आवह दियौक आकाश कें ।

आरती : *(अर्ध नेपथ्य सँ)* बाबूजी, माँजी के एखन हम किछ नहि कहलियैन्ह । एखन हमर कोनोटा दोष नहि अछि बाबूजी । कने रेडियो खोलि सुनैत छलहुँ ताहि दुआरे एतेक एखन केलइथ ।

सुमित्रा : गे माय गे माय, एहन अनर्थ तऽ कतहूँ नहि देखने छलियैक यौ बाबू सब । कहाबत छैक ''आगुक जनमल गोड़ लगावेएह ।'' देखु जे एहन अन्याय जेना लगैत छैक जे एकर हसठठुआ रहैक । ससुर सँऽ एना मुँह उघारि कऽ कुनू कनियाँ-मनियाँ बात करैत अछि । एकरा अंगना सँऽ एखन जाह नहि होइत छैक । ई मौगी एकरा मांथ सँऽ पाग उतारि कें रहतैक ।

सुरेश्वर : कने बजनाई पर अहूँ कन्ट्रोल करू ने ।

सुमित्रा : है एकटा बात कान खोलि के सुनि लैक लेल कहैत छियैक । आई जँऽ एकरा दुनू प्राणी के अलग नहि कऽ देतैक तऽ हम जहर-माहुर खा के मरि जायब एहि घर में ।

[संवाद जारी रहैत अछि ओही बीच में आकाशक छाता नेने प्रवेश । आकाश कें देखि आरती थोड़ेक आरो भीतरे दिस ससरि जाइत अछि ।]

आकाश : *(छाता के मोरैत)* की भेल ? घर में फेर कुनू ताल भेल ने की....

सुरेश्वर : हएत की । अहाँ अपन परिवार कें हाँट-दबार करब की नहि ।

आकाश : अपन परिवार । अहाँक ई भाषा हम बुझि नहि सकलहुँ बाबूजी ।

सुमित्रा : अरे इ की कहतैक ओहि उचरीन कनियाँ कें । इ जे हटतैक से एकरा हटल मे ओ छैक । एकरा तऽ नून पढ़ा कऽ खुआ देने छैक ओ मौगिया ।

आकाश : तखन सँऽ एकतरफा माँजी अहाँ बजने चलि जा रहल छी—आखिर बात की भेल से कम सँऽ कम हमहूँ तऽ बूझी ।

सुमित्रा : बात की हएत । अहाँ सँ कुनू बात आब छुपल तऽ नहि अछि । एतेक दिन बाते-बाती होइत छल । आब अहाँक घरवाली हमरा दुनू प्राणी के गारि पढ़ैत छथि- मारैत छथि ।

आकाश : *(क्रोधित)* गारि पढ़लक हें । अछि कतए । आइ जीवह नहि देबैक । ''नहि रहत बाँस आ नहि बाजत अजुका बाद बाँसुरी'' ।

[आकाश आरती के घीचि मंचक मध्य आनैत आ हाथक छाता सँऽ अनधुन मारह लगैत अछि ।]

आकाश : तूँ हमरा माय-बाप के गारि पढ़वह ? एतेक साहस तोरा जुटि गेलौक ?

आरती : *(कनैत)* हमर बात सुनू ने...कने हमर बात सुनू ने... *(कहिते रहि जाइत अछि । आकाश कें मारनाई जारी रहैत अछि ।)*

[तखनहि लुटन काका कें प्रवेश होइत छन्हि - आकाश कें अपना तरफ खींचैत छथि - आरतीक हिचकैत प्रस्थान होइत अछि ।]

लुटन : *(प्रवेशक संग संवाद)* राम....राम.....राम एना कतहुँ कियो माल-जाल जँका लोक-बेद कें मारैत अछि । तों छोड़ैत छह कि नहि ?

आकाश : छोड़ि दिएह लुटन काका हमरा । एहि घरक कलहक कारण इएह छी । ने इ रहत, ने झगड़ा होएत आ तखनहि जाकऽ हिनको सबके संतुष्टि हेतैन्ह ।

सुरेश्वर : लुटन ! हिनका सबके कहि दहून अपन चूल्हा-चेकी अलग करताह । किएक तऽ आब हमरा बुते पार नहिं लागत । दिनो-दिन इ रामा खटोला बढ़ले जा रहल अछि।

आकाश : की कहलहुँ । की बजलहुँ बाबूजी चुल्हा अलग करैक लेल । किएक चुल्हा अलग करैक लेल कहैत छी बाबूजी आ किएक चुल्हा अलग कऽ लिएह हम । हम कहैत छलहूँ ने । कहैत छलहुँ ने बाबूजी जे एखन विवाह नहि करब । हम तऽ साफ तरहे कहैत छलहुँ हमरा जहन कतहु नौकरी-चाकरीक जोगार लागि जायत तकर बाद विवाह-दनक चर्चा करब । ताहि समय मे अहाँ कहने रही - एखन हम जीबैत छी - अहाँ के एहि सब बातक चिन्ता नहि करक अछि । अहाँ एखन विवाह कऽ लियह । तऽ फेर

एखन की भऽ गेल बाबूजी..... की भऽ गेल अहाँ के जे अपन बात सँऽ मुकरि रहल छी । फेर किएक हमर विवाह करेलहुँ ?

सुरेश्वर : ऐ हौ लुटन तू ही कहऽ तऽ छोटका भाइक विवाह भऽ जेतैक आ जेठका कुमारे रहितैक तऽ लोक की कहितए हमरा हौ ?

आकाश : लोक की कहितए ? लोक इएह ने कहितए बाबूजी जे छोटका के घरवाली राखैक उपाई छैक आ जेठका कें घरवाली राखैक नहि सामर्थ्य छलैक तेंऽ विवाह नहिं केलक । एखन जे माथा पर पहाड़ टूटि रहल अछि, ताहि सँऽ तऽ बचल रहितहुँ ।

सुमित्रा : (लुटन सँ) यौ बच्चा की कहू इ घर सँऽ बाहर होइक नाम नहि लैत अछि । जानि नहि की पढ़ा कऽ खुआ देने छैक । ओकरा कोचा लागल भरि दिन बैसल रहैत अछि ।

आकाश : हाँ....हाँ.....माँजी शहर में तऽ जेना हमरा लेल नौकरी राखले अछि । माँजी भारी लगैत छी हम दूनू प्राणी ने । मोन राखब जाहि दिन हम दुनू प्राणी एहि घर सँऽ पैर बाहर निकालि देब, ओहि दिनक बाद फेर आपस पैर नहि राखब अहाँक घर में ।

सुमित्रा : इ दिन कहिया देखबै रौ - जे तू दुनू प्राणी एहि घर सँ चलि जेमह । ओहि दिन तऽ हम धुरियाले पैर जाकऽ महादेव के जल चढ़ेबैन्हि ।

सुरेश्वर : भरि दिन-राति खाली घरवाली-घरवाली करैत रहैत अछि । एकरत्ती एकरा अपन पहाड़ सनक जिनगीक चिन्ता छैक, जे कोना कऽ बिततैक ?

आकाश : बाबूजी घरवाली जँऽ सबटा नहि रहितैक तऽ हमर मायक मरलाक बाद अहाँ दोसर विवाह नहि करितहुँ । किएक दोसर विवाह केलहुँ घरेवालीक लेल ने ? बाबूजी सबटा बात हम बुझैत छियैक - एतेक किएक लुल्लू-थूथ्थू हमरा बनौने रहैत छी । जँऽ हमहू पाई कमैतहुँ आ पाई अहाँ सबहक हाथ मे दितहुँ तऽ हमरा सन बेटे नहि रहितय एहि दुनिया मे । एकेटा एहि **''कलहक''** कारण छी - ओ छी पाई, जे हम नहि कमाइत छी । बाबूजी, के नहि चाहैत अछि जे हमरा दूटा पाई आमदनी हुए, किन्तु की कऽ सकैत छी, इ अपना बसक बात तऽ नहि छियैक ।

लुटन : *(मौन के तोरैत)* छोड़ू अनठाऊ आब बात कें । बेसी होहल्ला भेला सँ बेकारक लोक जुटि जायत । कहावत अछि - ''घर फुटे गँवार लूटे'' ।

सुरेश्वर : हिनका सबकें कहि दहून आइ सँऽ अपन भोजन अलग बनेतइथ । देखह जे दलान पर बैसनाई मुश्किल भऽ जाइत अछि । एकटा नीक लोक एकरा-सबहक दुआरे हमरा दलान पर नहि बैसैत अछि । जहाँ कि कियो दलान पर पैर राखत की अंगना मे शुरू कऽ देत कुकरा-कटौंझ— तखन जे लोकक आगा मे हमर माथ लाज सँ झुकैत अछि से की कहियह । तें एहि अठाबज्जर सँऽ बढ़ियाँ रहत जे अपन व्यवस्था करै जाऊथ । तखनहिं जाकऽ दुनू प्राणी ठंढो हेताह ।

सुमित्रा : यौ बौआ हम कहैत छी - एहिये ठाम तऽ हमरो बेटा राजीव अछि । देखलियैक तऽ ओ कनियाँ के संगे राखैयो नहि चाहैत छल । कतेक अपनहि जोर दए के कहलखिन्ह तहन ओ परिवार के संगे लऽ गेल । सेहो ओकरा मजबूरी छलैक खेनाई बनेबाक । यौ बच्चा तेंऽ जाइयो देलियैक । आई हम कहैत छी बाऊ ई कमाई-खटाई नहि अछि - तहन तऽ एकर कनियाँ पाँच बेरकऽ दिन मे नुआ बदलैत अछि । हमर पुतहुँ जँऽ एखन आबि जाइक तऽ ओकरा इ सब बर्दास्त हेतैक ।

लुटन : छोरू आब एहि सब बात के ! *(आश्चर्यित)* किएक आकाश अहाँक अपन बेटा नहि छी । आकाशक कनियाँ अहाँक अपन पुतोहुँ नहि छि ?

आकाश : *(कनैत)* नहि लुटन काका । हम कतह सँ हिनकर बेटा हेबैन्हि । हिनकर बेटा तऽ सिर्फ राजीव छी जे शहर मे रहि खूब पाई कमाइत अछि । हमर सबहक लालन-पालन करैत अछि । बहुत कष्ट होइत अछि लुटन काका । बड़ा दुःख होइत अछि । कहियो ई नहि बुझलियैन्ह जे इ हमर सतमाय छियाइथ । भरि जन्म अपन माय जकाँ पूजा केलियैन्हि । पाँच वर्षक अवस्था में भगवान हमरा सँ माय छीन लेलैइथ, तहिया सँ एहि उम्र तक कतेक कष्टमय जीवन व्यतीत भेल आ भए रहल अछि से सिर्फ हम बुझैत छी । पाईक कारणे हमर पढ़ाई ई सब छोड़ा देलइथ हम किछु नहि कहलियैन्ह । इ अर्द्ध पढ़ाई हमरा बेरोजगार बनाकऽ छोड़ि देलक लुटन काका । बेरोजगार बनाकऽ छोड़ि देलक ......। *(कानह लगैत अछि ।)*

लुटन : चुप करह - तूहू बच्चा जकाँ कानह लगैत छह । *(सुरेश्वर एवं सुमित्रा सँ)* सब बातक निराकरण एखनहि करवाक अछि की ! अहाँ सब एखन कने दलान दिश जाऊ ने । पहिले आशांत मोन के शांत करु फेर कुलू निर्णय

लैजायब । एखन जाई जाऊ दलान दीस ।

[सुरेश्वर आ सुमित्रा आहिस्ता सँ प्रस्थान करैत छथि ।]

आकाश : हाँ बाबूजी, जाइ जाऊ, आई सँ निश्चिन्त भऽ जाऊ हमरा दूनू प्राणी सँ । हम अपन व्यवस्था कए लेब । कए लेब हम अपन व्यवस्था बाबूजी । की सोचैत छियैक माँजी, हमर सबहक गुजर नहि होएत ? हम सब भुखले रहि जायब ने अजुका बाद माँजी ? जाऊ, जाऊ, बाबूजी जाऊ......

लुटन : आकाश आब हमहूँ जाइत छियह कने खेत जेबाक अछि। झगड़ा-झंझट छोड़ह, कनियाँ के देखहुन । लोक बेद पर एना अकारण हाथ नहि उठाबी । जाह कनियाँ के देखहुन ।

[लुटन काकाक प्रस्थान होइत अछि । आकाशक आँखि सँऽ नोर झहरैत - शयन कक्षक तरफ धीरे-धीरे प्रस्थान होइक मुद्रा ।]

प्रकाश विलीन होइत अछि ।

अंक : प्रथम / दृश्य : दोसर

[स्थान : आकाशक विश्राम गृह । आरती हतासल आकाशक प्रतीक्षा मे टकटिहान लगौने रहैत अछि । मंच पर प्रकाशक संग आकाशक प्रवेश होइत अछि - ओ आरतीक तरफ बढ़ैत अछि । आरती बाँहिक सहारा पबैत जोर-जोर सँ झकझोरैत कानए लगैत अछि ।]

आकाश : हम अपना आप मे लज्जित छी आरती । Please हमरा माफ कऽ दियह । I am very sorry Arti.

आरती : अहाँ हमर पहिने बात नहि सुनलहुँ ने ।

आकाश : Sorry कहलहुँ ने आरती ।

आरती : अहाँ बिन बात बुझनहिं हमरा पर हाथ उठेलहुँ ने । बिन कसुरक, बिन अपराधक हमरा मारलहुँ ने ।

[आरो जोर-जोर सँऽ कानह लगैत अछि । आकाश सम्हारैक पूर्ण प्रयास करैत अछि ।]

आकाश : आरती, की अहाँक बात हम सुनितहुँ - हम की नया एलहुँ एहि घर मे ? हम की एहि घरक अवस्था सँ अवगत नहि छी ? हम इ की नहि बुझैत छियैक जे अहाँ कसुरवार नहि छी ? मगर हम कए की सकैत छी । ओहि आन्हर समय मे सब सँऽ कमजोर आ निहत्था अहाँ भेटैत छी आ मारि दैत छी । एकर मतलब हमरा कष्ट नहिं होइत अछि से बात नहिं छैक । कुनू टा चारा नहि बचि जाइत अछि । अहाँ के मारला सँऽ माँ-बाबूजीक आत्मा कें सन्तुष्टि भेटैत छन्हि ।

आरती : *(कानव पर अधिनस्त करैत)* एखन हमर कोनोटा कसूर नहि छल । रेडियो कने खोलि देने रहियैक । ताहि कारणे एतेक नाटक भेलए ।

आकाश : आरती, एतेक हतासल जुनि बनू । जे बेसी कनैत अछि - ओ हँसबो बेसी करैत अछि । सुख-दुःख तऽ एकटा सिक्काक दूटा पहलू थीक -नदीक दूटा कछार थीक । समयक प्रतीक्षा केनाई सीखू आरती, प्रतीक्षा केनाई सीखू । हमरा तऽ पूर्ण विश्वास अछि हमर सबहक समय परिवर्तन होएत । किएक तऽ आब बात प्रकाष्ठा पर पहुँचल जा रहल अछि । लागि रहल अछि सुखक दिन समीप आबि रहल अछि ।

आरती : हम आई अहाँक कुनूटा बात नहि सुनब । अहाँ बाहर चलि जाऊ । जेहने नौकरी भेटत पकड़ि लेब । कम सँऽ कम खाइक उपाई तऽ हेएत ने । तखन लोक इ बात नहि ने कहत जे हमर सबहक पालन-पोषण राजीव करैत छथि ।

आकाश : नहि आरती - आब बाहर हम असगर नहि जायब । बाहर जायब संगहि अहूँ के लऽ जायब - किएक तऽ हमरा रहैत मे अहाँक संग एहितरहक वर्ताव करैत छथि इ सब । जानि नहिं हमरा शहर गेलाक बाद आर की की करैए जेताह - आब हिनका सब पर विश्वास नहि रहि गेल । अहाँक असगर भेलाक बाद इ सब जहर-माहुर खुआ कऽ मारि देत ।

आरती : नहि-नहि, हम नहि जायब एखन बाहर अहाँक संग । एखन अहाँ एकटा टाका नहि कमाइत छी तहन तऽ अहाँक माय-बाबूजी कहैत छथि मोहि लेने छैक, नून पढ़ा कऽ खुआ देने छैक, कोंचा लागल बैसेने रहैत अछि । जँ एखन अहाँ संगे चलि जायब, नहिं जानि आर की-की कहती । फेर एतुका लोक की कहत ?

आकाश : एहि सब बातक हमरा परवाह नहि अछि जे लोक की कहत । एकटा पत्नी अपन पति सँऽ सुख दुःखक बात नहि करत तऽ ओ दोसर सँ जाकऽ बात करत ? अहाँ सब बात मोन सँ निकालि फेंकू । एहि सब बातक रत्ती भरि चिन्ता अहाँ जुनि करू । लोकक कहने की हेतैक लोक तऽ नीक देखत तैयो हँसत, आ खराब देखत तैयो हँसत । एना जँऽ लोकक बात पर चलए लागत लोक तऽ एकटा डेग आँगा नहिं बढ़ा सकत ।

आरती : अहाँ की कहऽ चाहैत छी हमरा......

आकाश : आरती बुझैक प्रयास करू एखन हमर सबहक दिन खराब अछि - तऽ लोको कें खराब नीक कहैक अवसर भेटल छैक । एखनहिं दिन नीक भऽ जायत तऽ लोको नीक कहऽ लागत ।

आरती : हम किछु नहिं बूझब । हमरा बुझाबैक प्रयास जुनि करू । अहाँ के जतेक जल्दी हुअए बाहर चलि जाऊ । हमर चिन्ता नहि करैक अछि । हमरा एतह किछु नहिं होएत । हमरा लेल एतेक बड़का समाज अछि ।

आकाश : एतेक धरफरी में जे हमरा जाइक लेल कहैत छी से एतेक जल्दी पाइक व्यवस्था......अहुँक फेर खर्चा-बर्चा......।

[आरती गला सँऽ मंगलसूत्र निकालि दैत अछि ।]

आरती : लिएह एकरा बन्धक राखि दियौक । पाई होएत फेर छोड़ा आनब । एखुनका बेगर्ता तऽ शांत भऽ जायत ।

आकाश : *(आश्चर्य)* मंगलसूत्र ? आरती अहाँ बताहि तऽ नहिं भऽ गेलहुँ.......?

आरती : एहि छोड़ि तऽ दोसर कोनोटा गहना नहि बाँचल अछि । सबटा कें तऽ बेचि लेलइथ । अहाँ किएक घबराइत छी—लिएह हमर सुहाग तऽ अहाँ छी, हमरा सिर्फ अहाँ चाही—सिर्फ अहाँ - नहिं चाही हमरा ई बनावटी सुहाग । *(कनैत झकझोरैत)* हमर एतेक बात अहाँ मानैत छी - एकटा इ बात मानि जाऊ ने - अहाँ बाहर चलि जायब ने । इ बात हमर मानि जाऊ अहाँ बाहर चलि जाऊ । चलि जायब ने ?

[आकाश मूरी हिला कें हाँ कहैत आरती के बाँहिक सहारा दैत अछि एवं नमहर साँस छोड़ैत..I love you Arti...I love you...]

प्रकाश विलीन होइत अछि ।

अंक : प्रथम | **दृश्य : तेसर**

[स्थान : राजीवक शहरी फ्लैट । समय : बेरुपहर । चुनमुन अखबार लए कुर्सी पर बैसि पढ़ि रहल अछि । कोमल मंच पर इजोतक संग प्रवेश करैत अछि - ओकरा हाथ मे एकटा पत्र अछि - पत्र खोलि पढ़ह लगैत अछि ।]

चुनमुन : (नजरि दौड़ाबैत) हमर बोहिन एतेक ध्यान मग्न कए के की पढ़ि रहल छथि ?

कोमल : गाम सँऽ मायक चिट्ठी आयल हें ।

चुनमुन : कोन मायक चिट्ठी आयल हें - ओझाजीक मायक ने....

कोमल : हाँ-हाँ, भैया ठीक बुझलौं, हुनके मायक चिट्ठी आयल हें।

चुनमुन : की कुनू खास बात पत्र में लिखल अछि की ?

कोमल : बात तऽ किछु खासे बुझा रहल अछि ।

चुनमुन : की लिखल अछि कने पढ़ह तऽ जोर-जोर सँऽ ?

कोमल : (पत्र पढ़ैत अछि) - चिरंजीवी राजीव आ कनियाँ के मायक तरफ सँ शुभ आशीर्वाद । हम कुशलपूर्वक छी । आशा नहिं पूर्ण विश्वास अछि मोन मे जे अहूँ सब कुशलपूर्वक होयब । जाहि लेल हरक्षण ईश्वरक भजन कीर्तन करैत रहैत छी । आँगा कनियाँ अहाँ पूजा में गाँव चलि आयब ओतह रहने अहाँ कें गरफैदा अछि । किएक तऽ जँऽ अहे एतह नहिं आयब तऽ आकाशक कनियाँक हाथ-बात सबटा एहिघर मे भऽ जायत । हम नहि चाहैत छी जे अ मौगिया हमरा घरक मलंकानि बनि कऽ रहत । आकाश हमर बेटा नहि छी, ओ अहाँक ससुर प्रथम स्त्रीक बेटा छी । हमरा तऽ मात्र एकटा बेटा अछि

राजीव । अहाँ एतऽ जतेक जल्दी भए सकय चलि आऊ फेर एहन चालि हम खेलायब की आकाश आ ओकर कनियाँ के एतह सँ पड़ाए पर बाध्य कए देबैक एवं एकछत्र राज अहाँ के भऽ जायत - हमर राजीव के भऽ जायत । पूरा सम्पत्तिक मालिक हमर राजीव भऽ जायत । अहाँकि जतेक जल्दी होमए राजीवक संगे गाँव चलि आऊ । इ पत्र राजीव कें नहि पढ़ए देबैक ।

—अहींक साऊस

चुनमुन : ओहो मशीना पाको...बात बहुत सिरियस बुझना जाइत अछि ।

कोमल : भैया अहाँ के हर समय हर बात मजाके बुझाइत अछि । माँजीक एकटा बात हमरा माथा में नहिं ढूकि रहल अछि । चिट्ठीक एकोटा बात हमरा समझि मे नहि आयल ।

चुनमुन : मशीना पाको.......चिन्ता करैक कुनू बात नहि छैक बहना । कारण हमरा माथा में माँजीक हर बात नीक जकाँ ढूकि गेल । मशीना पाको..... माँजीक हर बात हमरा समझि मे नीक जकाँ आबि गेल । मशीना पाको.....आब हमरो गोरा-गाटा नीक जकाँ बसि जाइक पूर्ण सम्भावना अछि । मशीना पाको.....

कोमल : आब की कएल जायत भैया ....?

चुनमुन : मशीना पाको.....आबो पुछि रहल छह की कएल की जायत ? आब हमरा सबके एही मे कल्याण अछि जे माँजीक पत्रक सम्मान कए हुनक बताएल रास्ता पर चलि हुनकर आज्ञाक पालन कए कऽ आज्ञाकारी बनी । मशीना पाको....आब जतेक शीघ्र भऽ सकत से गामक लेल एहिठाम सँ प्रस्थान करी । मशीना पाको......

कोमल : आखिर माँजी एहन पत्र किएक लिखलइथ ?

चुनमुन : मशीना पाको....कोमल इ बात हम तोरा बहुत पहिनैये कहैक लेल रहियौक, मगर ओझाजीक मूड ठीक नहि देखैत छलियैन्हि तें नहि कहैत छलियौक । मशीना पाको....

कोमल : भैया आब हम की करब से कहू ने ?

चुनमुन : मशीना पाको......अहाँ कें इएह करक अछि की आब अहाँ किछु दिन गामे मे रहू । अरे गाम मे तोरो हिस्सा ने छौक । तोहर हिस्सा पाबि ओ सब महदा-भादव मनाबैत अछि । ककरो जँ बड़ सम्पत्ति भऽ जाइत छैक तऽ ओ की अपन सम्पत्ति कें लुटबह लगैत अछि । मशीना पाको....

कोमल : भैया हमरा करह की पड़त से बताऊ ने ? हम करैक लेल तैयार छी ।

चुनमुन : ओ मशीना पाको.....अहाँ कें बहना इएह करैक अछि—ओझाजी एखन ऑफिस सँ अबैत छथि हुनका साफ तरहें कहि दहुन जे हम पूजा मे गाम जायब से टिकट बनवा लियह आ एहिबेर जे हम गाम जायब तऽ गामे मे रहब । मशीना पाको.......

कोमल : ठीक अछि भैया....पहिने आइ ऑफिस सँ आबह तऽ दियौन्ह । हमरो आब सब बात माथा में नीक जकाँ ढूकि गेल ।

चुनमुन : मशीना पाको.....अरे ओ आकाशक कनियाँ तऽ ओझाजी के मोहि लेने छन्हि । हर समय भैया-भौजीक चर्चा जेना लगैत रहैत अछि आरो ककरो भैया-भौजी दुनियाँ मे छहिये नहि, हुनकर भैया-भौजीक आगा दुनियाँक हर भैया-भौजी फेल छथि । बड़ाइयो करैक एकटा सीम होइत अछि, एतह तऽ हद भऽ गेल । हमरा तऽ लगैत अछि ओ मौगिया ओझाजी के नून-तून पढ़ा कऽ खुआ देने छन्हि । मशीना पाको.....

कोमल : की कहलहु भैया....

चुनमुन : मशीना पाको.....आर नहि तऽ की, जकरा अपन लोक बेद परिवार भऽ जेतैक से पहिने अपन कें देखत की भैया-भौजी के ? जानि नहि हमर सोन सनहक बोहिन कें कोना कऽ रखने छथि । एकरत्ती हुनका चिन्ता छन्हि कोमलक ? रत्ती भरि चिन्ता नहि छैन्ह हुनका । हमरा तऽ लगैत अछि कोमल मरि जायत तऽ मरह देथीन्ह, मगर भैया-भौजीक कें किछु हेतैन्ह तऽ जान दऽ देथीन्ह । इ केहन दुर्भाग्य आबि गेलन्हि । मशीना पाको......

कोमल : *(उत्तेजितभऽ)* आई पहिने हुनका ऑफिस सँ आवह तऽ दियौन्ह । आई हुनकर एकटा बात हम नहि मानबन्हि । हम गाम जेबे करब । एक बेर हमरा गाम जाई दियह भैया, फेर ओहि घर में एहन नाच-नचायब की ''नानी ने मरिहें'' जे फेर सँ भैया-भौजीक नाम रटतइथ । *(कहैत चिट्ठी फारि दैत अछि ।)*

चुनमुन : मशीना पाको.....चिट्ठी किएक फाड़ि देलियैक ? मशीना पाको.....

कोमल : जँ इ चिट्ठी पढ़ि लेताइथ तऽ माइयो के फाँसी लगा देथीन्ह । यौ भैया भागो तऽ भैया-भौजीक एकटा चिट्ठी हुनका हाथ नहि लागए दैत छी सबटा के फाड़ि आगि लगा दैत छी । जँ भैया-भौजीक चिट्ठी हाथ लागि जेतन्हि तहन तऽ बुझाइत अछि नौकरी छोड़ि भैया-भौजी लग चलि जेताह ।

चुनमुन : मशीना पाको......बाप रे बाप....अनर्थ....घोर अनर्थ.... मशीना पाको....

कोमल : अहाँ के आब की भए गेल भैया .... ?

चुनमुन : मशीना पाको.... इ बात जहिया ओझाजी बुझि गेलखुन्ह जे तों पत्र के जड़ा दैत छिही - ओहि दिन तऽ ओ तोरा संग-संग हमरो जड़ा देताइथ । अनर्थ....घोर अनर्थ । मशीना पाको....

[राजीवक प्रवेश हाथ मे ऑफिस ब्रिफकेश लए के ।]

राजीव : रौ वैह, भाई बोहिन मिलकऽ बड़ा एकान्ती करैत छी यौ। किछु गड़वर गप्प छै की ?

चुनमुन : बेरोजगार आदमी के गप्पक शिवाई....मशीना पाको....

राजीव : नहि, नहि जरूर कुनू गड़वर गप्प छी ।

[कोमल हाथ सँ ब्रिफकेश लए टेबुल पर रखैत अछि । राजीव कोट खोलह लगैत अछि । कोमल कोट उतारैत अछि ।]

कोमल : आई मोन ठण्डा अछि की.......

राजीव : किएक ! चुनमुन बाबू सनहक भाई के रहैत इ बात हमरा सँ पुछैत छी.....

[कोमल लजाइत कोट कुर्सी पर लटकाबैत अछि ।]

कोमल : *(टाई खोलैत)* अहाँ कें सब समय मजाके रहैत अछि ।

चुनमुन : अहाँ सब बात करु हम कने डोल-डाल सँ भेल अबैत छी।

(कोमल आ चुनमुनक बीच किछु इशारा सँ बात होइत अछि एवं चुनमुनक प्रस्थान होइत अछि ।)

राजीव : *(कुर्सी पर बैसैत)* बाजू की बात छी ?

[कोमल टेबुल पर सँ जग उठा गिलास मे ढारैत अछि । गिलास राजीव के थमाबैत अछि ।]

कोमल : पहिने कहू मोन ठंढा अछि की नहि । तकरवादे किछु कहब ।

राजीव : मोन ठंढ़ा तऽ नहि छल मुदा इ ठंढ़ा जल पिलाक बाद मोन जरूर ठंढा भऽ जायत । *(जल पीब लैत अछि ।)*

[चुनमुनक प्रवेश होइत अछि ।]

राजीव : की यौ डोल डाल सँ आबि गेलहुँ ?

चुनमुन : एक बेर तऽ कहलहुँ बेरोजगार डोल-डाल के सिवाई.....

राजीव : *(जेबी सँ किछु पाइ दैत)* लियह चाय-पत्ती कहने छलाइथ, ध्यान पर नहि रहल । कने कष्ट कए नेने आऊ ।

चुनमुन : एहि मे कष्टक कोन बात छैक बेरोजगार एकर शिवाई..... मशीना पाको [कहैत प्रस्थान]

राजीव : अहुँक भाई हमरा पाँछा परल रहैत छथि । हर समय घर में घुसियायल रहैत छथि । चलू मौका भेटल गप्प करक। बाजू की बात छी......

चुनमुन : *(प्रवेश)* ओझाजी अहुँ बेकारक तंग करेलहुँ । भिनसरे तऽ चाह पत्ती आयल, एखनहि कोना सधि गेल ? मशीना पाको.....इ तऽ हमरा रास्ता मे मोन पड़ल ।

राजीव : ओह तऽ कोमल हमरा जाइ काल की नेने अबैक लेल कहने रही ?

कोमल : *(लजाइत मुस्कुराइत अछि)* बुद्धू, चाहक पत्ती नहि, चिड़ैता पत्ती कहने रही । भैया के सधि गेल छन्हि ।

राजीव : अच्छे छोड़ू कुनू पत्तिये ने कहने छलहुँ । अच्छे चलू आई मौका नहि आवह वला अछि - जल्दी बाजू की कह चाहैत छी ।

कोमल : गाम सँ मायक चिट्ठी आयल हें ।

राजीव : कोन माईक । अहाँक माईक ने हमर माईक ?

चुनमुन : मारू बहीं, छोटका लोकक भाषा जे बजैत अछि । मेक माईक । जेना लगैत अछि लाऊडीसपीकरक बेना-बट्टा भऽ

रहल अछि, औ माय कहियौ ने माय । ओ मशीना पाको.... सॉरी साहेब, हमरा एखन नहि बजबाक चाही । तहन बोहिन हमर भने मोन पाड़लक चिड़ैता नेनहिये आबी। *(अभिनय करैत)* औजी बजैवला बात नहि रहल । तरे-ऊपरे नोचनी । जानि नहि कहिया छूटत । चिड़ैता पिबैत-पिबैत थाकि गेलहुँ । मशीना पाको....*(कहैत प्रस्थान करैत छथि ।)*

कोमल : अहाँ मायक चिट्ठी आयल हें ।

राजीव : हमरो मोन इएह कहैत छल जे हमरे मायक चिट्ठी होयत। कारण अहाँक माय कतह सँ एतेक होसगर हेतीह जे चिट्ठी-पत्री देतीह ।

कोमल : फेर मजाक शुरू कए देलहुँ अहाँ ने....

राजीव : चलू Sorry कहलहुँ....चिट्ठी कतह अछि निकालू.....

कोमल : चिट्ठी Personal हमर नाम सँ छल ।

राजीव : हमर मायक चिट्ठी आ Personal सेहो अहाँक, असम्भव। इ बात तऽ भए नहि सकैत अछि । जँऽ भ सकैत अछि तऽ फेर जरूर कुनू एहन रहस्यमय बात होयत । खैर छोड़ू बात कें । गाम पर सब कुशल-मंगल अछि तऽ ? भैया-भौजी कोना छथि ?

कोमल : *(तमसाइत)* अहाँकें तऽ खाली भैया-भौजी सँऽ मतलब रहैत अछि । दुनियाँ मे आरो ककरो भैया-भौजी छैक की अहींटा कें ?

राजीव : *(डाँटैत)* कोमल ! मारि देब जँऽ एक बेर अहाँ हमरा भैया-भौजीक खिलाफ नजरि कऽ कए एकटा शब्द जँ बजलहुँ।

कोमल : *(झुँझलाइत)* हँऽ, हँऽ, हुनका सबहक आगाँ मे हम अहाँक लगिते के छी ? हम तऽ ओहि घरक नौकरानी छी—नौकरानी। ओहि घर मे हमर कोन मोल अछि । हमर के मोजर रखने अछि ।

राजीव : कोमल फेर शुरू कए देलहुँ ने रोज-रोजक नाटक *(उठैत)* जानि नहि अहाँ कहिया हमरा बुझब । कतेक दिन लागत हमरा पहचानऽ मे । ओ हमर सिर्फ भाऊज नहि थीक । ओ हमर माय तुल्य भाऊज छी । आई जतेक ऐसो आराम मे रहैत छी - सबटा हुनकर पूजा आ कर्त्तव्यक फल छी । हमर पढ़ाई-लिखाई मे हुनकर सारा गहना बिका गेलन्हि। जनैत छी अहाँ-मात्र एक साल भेल रहनि हमरा घर मे पैर रखना - जहन ओ अपन सौख-मनोरथ के बिसरि हमरा इंजिनियर बनेबाक खातिर अपन सबटा गहना बेच देलन्हि। ओतबे नहि जहन हमर इंजिनियरिंगक लास्ट परीक्षा फार्म भरैक बेर आयल तऽ बाबूजी सँ दू हजार टाकाक जोगार नहि भऽ सकलन्हि । ई नौबत आबि गेल जे आब फार्म नहि भरल जायत । ताहि अवस्था में बुझल अछि की केलक ओ भाऊज हमरा लेल - ओ अपन मंगलसूत्र दू हजार में बंधक राखि परीक्षा बलजोरी दियेलन्हि । सुहाग बेचैक लेल तैयार भऽ गेल । ओहि भौजीक खिलाफ बजैत छी अहाँ-ओ हमरा लेल पुज्यनीयाँ छथि आ पूज्यनीयाँ रहती ।

कोमल : अच्छे अच्छे मानलहुँ ओ अहाँक इष्टदेवी छिएथि । खूब जल-फूल लए पूजा करैत रहू अहाँ । मगर हमरा हुनका सब सँ कुनू मतलब नहि । अहाँक कहब अछि हम जिनगी भरि हुनका आँगा झुकल रही, आ ओ सब दिन हमरा सँ ऊपर भऽ कए रहती ।

राजीव : कोमल हुनका सँ छोट छी । झुकला सँ पाप तऽ नहि लागत । एहि मे ऊपर आ तरक कोन बात छैक ।

कोमल : हम किछु नहि सुनह चाहतै छी । अहाँ हमर बात सुनब कि नहि।

राजीव : बात की अछि मोन मे से तऽ खुलि के बजिते नहि छी । जे बात अछि साफ तरहें बाजू........

कोमल : पूजा मे हम गाम जायब

[चुनमुनक प्रवेश स्थिति देखि चुप भए ठाढ़ रहैत अछि ।]

राजीव : (आश्चर्य) गाम ! सेहो पूजा में ! पूजा कें तऽ आब दसो टा दिन नहि बचि गेल अछि । छुट्टी से नहि अछि । टिकटक से दिक्कति ।

कोमल : हम अहाँक बात किछु नहि सुनह चाहैत छी । एक बेर कहलहुँ जे पूजा मे गाम जायब तऽ बुझू निश्चित जायब। टिकट कुनू एजेन्सी वला सँ लऽ लियह । बेसीये टाका लागत ने, लागह दियौक ।

राजीव : परन्च छुट्टीक से Problems अछि ।

चुनमुन : मशीना पाको....अरे ओझाजी एहि लेल एतेक विचलित होइक कोन बात छैक । कोमल कें मोन भेलैक गाम जाइक तऽ जाई ने दियौक ।

राजीव : हाँ, हाँ ठीक अछि । मानलहुँ बात । परन्च एतेक जल्दी सँ ई Programme किएक बनल । जरूर किछु रहस्यमय बात छी । कतह अछि मायक चिट्ठी जरूर ओहि चिट्ठीक कुनू करिश्मा छी ।

कोमल : हमरा नहि टोकब आई सँ अहाँ । हाँ हम एक बेर कहलहुँ ने ओ हमर Personal Letter छल । एखुनका बाद हमरा अहाँ एकबेर नहि टोकू । आई अहाँ हदक हर सीमाकें पार कऽ गेलहुँ ।

राजीव : हमर मायक चिट्ठी के Personal चिट्ठी बना कें सीमा आ मर्यादा दुनूक उल्लंघन अहाँ कऽ रहल छी । आरोप मनगढ़न्त हमरा ऊपर लगा रहल छी ।

चुनमुन : ओझाजी दुनू गोटा एक बेर जुनि बाजू, ने एक बेर तमसाऊ । अहीं कने शांत भऽ जाऊ ने । मशीना पाको....

कोमल : छोड़ि दियौन्ह हिनका । जँऽ हिनका नहि कुनू मतलब छन्हि हमरा सुख-दुःख सँ तऽ हमरो नहि मतलब अछि हिनका सँ । अहाँ चुपचाप चूड़ी पहिर घर मे बैसल रहू । देखैत रहियौक हम गाम जाइत छियैक कि नहि । एकटा बात कान खोलि के सुनि लियह, हम तऽ कहुना ने कहुना चलिये जायब । हमर मुँह देखनाई सपना भऽ जायत । रहब ओहि भैया-भौजीक के लके । *(कानए लगैत अछि ।)*

राजीव : कोमल.... फेर भैया-भौजी । एहि गाम जाइक बात मे भैया-भौजीक चर्चा किएक बार-बार अबैत अछि । हमरा संदेह भऽ रहल अछि । एहि हटाथ गाम जाइक प्लान पर। जरूर ओहि चिट्ठीक कुनू करामात छी । नहि तऽ माय-बापक चिट्ठी कतौ Personal चिट्ठी होइत छैक ।

कोमल : हँऽ, हँऽ हम सब मिलकऽ खेल खेला रहल छी । हमर के अछि एतह ? हमरा अहाँ सँऽ किछु कहैक अधिकार नहि अछि । हम अहाँक लगिते के छी । कियो नहि, किछु नहि । मोन राखब फेर घुमि के एतह नहि आयब हम ।

[जोर-जोर सँऽ कानह लगैत अछि । राजीव किछु विचलित होइत अछि ।]

राजीव : ओह कोमल अहाँ हमर माथा खराब कए के राखि देब । बस करू आब अहींक बात रहल पूजा मे गाम जायब । *(चिकरैत)* चुनमुन, चुनमुन औ जी चुनमुन बाबू ।

[चुनमुन एक कात सँऽ डराइत, थरथराइत करीब अबैत अछि ।]

चुनमुन : मशीना पाको....आब हमरा पर बरसबैक की । हम अहाँक भैया-भौजीक नहि विरोधी छी । Support मे छी यौ । मशीना पाको.....

राजीव : अहूँ आब बात के बेसी जुनि लारू-चारू । ब्रिफकेश कने लाऊ टेबुल पर सँऽ ।

चुनमुन : (ब्रिफकेश दैत) मशीना पाको....कने किएक पूरा-पूरी ब्रिफकेश लियह । मशीना पाको.....

[राजीव खोलि किछु नोट निकालि चुनमुन के दैत अछि ।]

राजीव : इ लियह आ कुनू टिकिट एजेन्सी वला सँऽ गामक लेल तीन गोट टिकट बनबौने आऊ ।

चुनमुन : मशीना पाको.....कहियाक टिकिट बनायब से तऽ कहबे नहि केलहुँ ।

राजीव : *(किछु सोचैत, केलेन्डर देखि)* सप्तमी दिन तारीख भऽ गेल उन्नीस । जाऊ उन्नीस तारिखक टिकिट लए लेब ।

चुनमुन : *(प्रस्थान करैत)* मशीना पाको.....इ की हो गइल बा । मशीना पाको....

[राजीव जग सँऽ एक गिलास जल निकालि कोमलक करीब आबि ।]

राजीव : लियह कने जल पीबि लियह, मोन ठंढा भऽ जायत । किछु बेसिये गरमायल छी ।

कोमल : *(दूर हटैत)* Don't touch me.

राजीव : आबहुँ तऽ प्रसन्न भऽ जाऊ कोमल । आब तऽ अहाँक भाई साहेब टिकटक लेल प्रस्थान कऽ गेलाह ।

कोमल : I say don't take me.

राजीव : Please Komal (कोमल/I don't no) हमर बात तऽ पहिने सुनू । इ अहाँक दोष नहि अछि । ई तऽ नारी जातिक दोष छी । कुनू आदमी जखन काज सँ हकासल-पियासल घर अबैत अछि, तखन एकटा पत्नीक की कर्त्तव्य होइत छैक । ओकरा कुनू एहन बात नहि कहबाक चाही जाहि सँ ओ क्रोधित भऽ उठए । अहाँ ने भरिदिन घर मे बैसल रहैत छी आ टिकिट अडंड टाका खर्चा कऽकें एजेन्सी वला सँऽ लैक सलाह दैत छी परन्तु एकटा टाका कोना के उपार्जन कएल जाइत छैक से तऽ नहि बुझैत छियैक । अहाँ सँ जँऽ कियो पूछत टाका खर्चा कोना के कएल जाइत अछि से तऽ झट सँ बता देबैक । बताए टा नहि देबैक खर्चा कऽ के देखा देबैक वा खर्चा करवा देबैक । अच्छे छोड़ू जे भेलैक से भेलैक । बजैत बजैत मुँह दुखा गेल । चलू आब तऽ हँसू । Please Komal एक बेर हँसू, Do you not love me. ?

[राजीव कोमल के गुदगुदी लगबैत अछि, कोमल खिलखिला के हँसैत अछि । एवं राजीवक करीब जाइत अछि ।]

राजीव : Very Thanks Komal. अहाँ जे हँसलहुँ ताहिक लेल । I love you. कोमल हमरा बुझैक प्रयास करू । *(एक दोसराक बाँहिक सहारा लैत अछि ।)*

प्रकाश विलीन होइत अछि ।

अंक : दोसर — दृश्य : पहिल

[स्थान : सुरेश्वर बाबूक आंगन । समय : भिन्सुरका । आकाश माथा पर हाथ लए बैसल अछि । खाट पर सुरेश्वर आ लुटन काका बैसल छथि ।]

सुरेश्वर : (प्रकाशक संग) की जमाना आबि गेल । बाप के बेटा पर बजैक अधिकार नहि छैक ।

लुटन : किएक नहि हाँट-दबार करैक अधिकार रहतैक । एहिना बाप बेटा पर बजैत छैक की । इ कुनू नवका बात छियैक । *(आकाशक हाथ ओकरा माथा पर सँऽ उतारैत)* माथा पर हाथ लय नहि बैसी । तों तऽ लगैत छह कतेक बूढ़ प्रतिष्ठित भऽ गेलह । रे एखन तों सब धिया-पुता छह । धिया-पुता के गार्जियन एहिना डाँट-दबार करैत छैक । इ त खुशीक बात छी । इ तऽ अधिकार छियैक माय-बापक ।

आकाश: लुटन काका माय-बापक जरूर अधिकार छैक हाँट-दबार करबाक । बाबूजी सँऽ सच-सच बजैक लेल कहबैन्ह एहि अधिकार मे कखनहुँ कमी एलैन्ह हें परन्तु बापक ई कर्तव्य नहि होइत छैक जे बेरोजगार बेटा के दहेजक लोभे विवाह इ कहि करा दियैक जे एखन हम जीवैत छी - अहाँ कें कुनू चिन्ता नहि करैक अछि । विवाह अहाँ कऽ लियह । फेर विवाह करेलाक बाँद अन्हार जंगल मे ठाढ़ कए ओकरा सँऽ साफ तरहें नाता तोरि ली । बापक ई कर्तव्य नहि होइत छैक जे बेटा पाई नहि कमाइत अछि तऽ ओही बेटा के हीन भाव सँऽ देखी, ओकरा स्त्रीक सामने मे ओकर कमजोरी कैं उज़ागर करी । आ नहि बापक इएह कर्तव्य होइत छैक निःसहाय बेटा के भिन्न कए ओकरा सँऽ छुटकारा पाबी ।

सुरेश्वर : ओ, तऽ आब ई हमरा बापक की सब कर्तव्य होइत छैक तकर पाठ सिखा रहल अछि । सुनैत छहक ने एकर गप्प-सप्प लुटन ।

आकाश: नहि बाबूजी हम किएक कर्तव्यक पाठ सिखायब । परन्तु एकटा बात जिनगी भरि कहिते रहि जायब हमरा जिनगीक लेल अहाँ किछु नहि केलहुँ । जँऽ कुनू बेटाक स्थिति सब तरहें खराब अछि - ओकर साफ जिम्मेदार माय-बाप होइत अछि ।

लुटन : फेर इस सब की शुरू भऽ गेल । लोक एकठाम बैसि मुँह सँऽ नीक बात निकालैत अछि ।

आकाश : बाजह दियऽ लुटन काका । बड़ दिन चुप्प रहलहुँ । बेटा जन्म देने नहि होइत छैक बाबूजी । बेटा के जखन लालन-पालन कए कुनू योग्य बना दैत अछि तखन ओ बाप ओहि बेटाक बाप कहैवाला होइत अछि । बेटा जन्म देने नहि होइत छैक बाबूजी - बेटा जन्म लेलाक बाद जँऽ ओ बेटा कुकुर-बिलाड़ि भए गेल तऽ ओ बाप ओहि बेटाक स्थितिक साफ जिम्मेवार होइत अछि ।

सुरेश्वर : इ सबटा मनगढ़न्त बात छियह तोहर । हमरा तऽ जतेक भऽ सकल आ जतह तक सामर्थ्य छल हमरा मे दूनू भाई के बराबर करक प्रयत्न केलहुँ । तखन तऽ जकरा भाग्य मे जे छल से भेल आ भऽ रहल अछि ।

आकाश : बाबूजी बेकारक भाग्य कें किएक दोष दैत छियैक । माय-बापक जखन नेत खराब भऽ जाइत अछि ......

सुरेश्वर : फेर देखह लुटन । एकर बात सब सुनह । ऐ हौ हमर नेत खराब अछि हौ ?

आकाश : आर नहि तऽ की जे बेटा कमाइत-खटाइत अछि । मायो बाप ओकरे पक्षधर होइत अछि । बाबूजी अहाँक दोष नहि अछि ठीके तऽ कहलियैक हमर भाग्ये मे इएह किछु सब भेनाई लिखल अछि ।

[राजीवक हाथ मे बैग, कोमलक गला सँऽ लटकल मनीबैग आ चुनमुनक दुनू हाथ मे भारी-भड़कम एटैची लए शहर सँ आगमन होइत अछि । राजीव बारी-बारी सँऽ सबके गोर लगैत अछि । आहट सुनि आरती आ सुमित्राक प्रवेश । सुमित्रा आगा बढ़ि जाइत अछि । आरती अर्ध्य नेपथ्य रूपे ठार अछि । कोमल आ राजीव सुमित्रा कें गोर लगैत अछि । इ सब बात चुनमुन सेहो करैत अछि। राजीव आरती के सेहो गोर लागि अबैत अछि परन्तु कोमल आरतीक पैर नहि छुबैत अछि । राजीव एहि बात पर ध्यान देने रहैत अछि ।]

राजीव : (आरतीक तरफ इशारा करैत) भौजी उम्हर छथि । जा का गोर लगियौन्ह भौजी कें ।

[एहि बात पर किछु पल भरिक लेल कोमलक नजरि राजीव पर कड़गर भए पड़ैत अछि । एकटा खिन्न भावक अभिनय करैत आरतीक पैर छुबैत अछि ।]

सुमित्रा : घर चलै चलू ।

[चुनमुन फेर अभिनय करैत दुनू एटैची लय एवं आरती, कोमल सुमित्राक संग प्रस्थान करैत अछि ।]

राजीव : *(पाई निकालि दैत)* लियह भैया रिक्शावाला कें पाई दें अबियौक ।

[पाई लैत आकाशक प्रस्थानक मुद्रा । प्रवेशक समय मे लुक काका समयानुसार संवादक प्रयोग करैत छथि ।]

प्रकाश विलीन होइत अछि ।

अंक : दोसर — दृश्य : दोसर

[सुरेश्वर बाबू टेरूआ काटि रहल छथि । किछु कालक बाद राजीवक प्रवेश । पाँछा सँऽ सुमित्राक एक लोटा जलक संग प्रवेश ।]

राजीव : बाबूजी हमरा बजेने छलहुँ ?

सुरेश्वर : हाँ आवह *(किछु सोचलाक बाद)* बजेलियह जे हमर विचार छल एहि बेर जे जेबह तऽ संगे आकाश के सेहो लऽ लिहक । जेहने काज भऽ सकह, तेहने काज ओकरा धरा दिहक । कम सँऽ कम अपन परिवारक ओकर गुजारा भए जाई ।

सुमित्रा : *(जलक लोटा रखैत)* की बजलै ई, नहि रौ बौआ ओकरा नहि संगे लऽ तऽ जाइक छैक ।

सुरेश्वर : हर एक बात मे एना थेथ नहि रोपह लगियौक । जेबे करतैक तऽ की हेतैक । भाइये लग जायत ने ।

सुमित्रा : नहि-नहि, ओतह गेलाक बाद जान पर भऽ जायत नेना कें। ओ नहि नीपै योग अछि आ नहि पोतै योग ।

राजीव : माय तो किएक एना बाजि रहल छा । बाबूजीक कहब तऽ ठीके छन्हि - बेकारक एतय बैसि कऽ की करताह भैया । गाम परहक लेल एखन बाबूजी छथिये ।

सुमित्रा : रौ बौआ ओकरा तों आई लऽ जेबहीक, काल्हि पराई गाम चलि आऊतौ । ओ एक दिन ओहि मौगियाक बिना नहि रहि सकत । आ नहि ओ मौगिये ओकरा बिन एक दिन बिता सकत ।

सुरेश्वर : राजीवक माय ! एहि सब बात मे टाँग जुनि अरवियौक ।

सुमित्रा : ई बेसी बुझऽ लगलैक ने । राजीव बेटा अहाँ अबुझनु
जकाँ बात करैत छी । हटाथ अहाँ अपना संगे लऽ जाक
कोन काज पकरेबैक । कुनू खराब काज पकरा जेतैक
लोक की कहत एकटा इंजिनियरक भाई एहने काज करै
अछि सेहो जेठका । बाबूजी सेहो तऽ आब बूढ़ भेलाइथ,
गामो पर तऽ एक भाइक रहनाई जरूरी अछिये ।

सुरेश्वर : नहि-नहि, गाम परहक कुनू चिन्ता नहि । गाम परह
काजक लेल एखन हम काफी छी । चिन्ता जँऽ अछि त
नाम मात्र आकाशक । नहि जानि ओ हमरा जीवैत सुधा
सकत की नहि । ओकरा अहाँ संगे नेने जाऊ ।

राजीव : माइयोक कहब ठीके अछि बाबूजी । एखन ओतह गेला
बाद तुरन्त तऽ नौकरी नहि भेट जायत । हम ओतह गेला
बाद जोगार-पाती लगायब । *(आकाशक प्रवेश)* भनहिं भै
सेहो आबिये गेलाइथ ।

आकाश : राजीव अहाँक इ बात सब एकतरफा अपना मोन सँ केना
हमरा एकदम नीक नहि लागल ।

राजीव : कोन बात हमर काएल अहाँके नीक नहि लागल भैया ।

आकाश : चुल्हा के फोड़ि एक केनाई । जखन माँ-बाबूजी हमरा ओ
चुल्हा सँऽ अलग कऽ देलाइथ तऽ फेर ओहि चुल्हा सँ
अलगे रहैक हमहू निर्णय लऽ चुकल छी । कतेक दिन त
हमरा दुनू प्राणीक चिन्ता अहाँ सब करै जायब । हम आ
साझी नहि होमह चाहैत छी ।

सुमित्रा : वैएह लियह, मोन टूटि जाई गेलौह ने इ अंगोर सनह
बोल सुनि कऽ ।

आकाश : हाँ, हाँ माँजी, हम बड़ खराब छी, हमर स्त्री बड़ खरा

अछि । अहाँ सब बड़ नीक छी, रहू गऽ ने । बड़ खराब
छी तऽ हम सब सटैक लेल नहि जायब ।

राजीव : भैया फेर अहाँ की अन्ट-सन्ट बाजय लगलहुँ । एकठाम
रहला सँऽ एहिना झगरा-झंझट होइत रहैत छैक । एहि
झगरा-झंझट सँऽ की शोणितक सम्बन्ध समाप्त भऽ जायत ?
बिसरू सबटा पहुलका बात । एक बेर फेर सँ सजेनाई
शुरू करु एहि घर कें । हँऽ की कहलहुँ अहाँ सब सटैक
लेल नहि आयब ? किन्तु हम अएबे करब ।

आकाश : नहि राजीव अहाँ सब दिन शहर मे रहलहुँ - असगर
रहलहुँ, अहाँ नहि बुझि सकब गाम घरक बात । आ नहि
कहियो बेरोजगारे रहलहुँ जे अहाँ हमर स्थिति बुझब ।
अहाँ सब हमर बड़ केलहुँ ताहि लेल अहाँ सबके धन्यवाद ।

सुरेश्वर : अच्छे तऽ तो भिन्ने रहऽ चाहैत छह ने, रहऽ गऽ, छोरै जाई
जा, बात के हटावह । जे मोन करै जाई जा सेएह करह ।
जेएह फुरेतह सेएह करबह ।

राजीव : भैया हम सबटा अहाँक बात बुझैत छी । बस अन्तिम बेर
हमर बात मानू । एहि बेरका बाद हम कहियो किछु नहि
कहब ।

सुमित्रा : तू हू कतेक बात के चिरह लगलह । ई भिन्न-भिनाऊज
भेनाई तऽ संसारक रीति छियैक । राजा सँऽ लऽ के रंक
तक जखनहि एक सँड़ दू, दू सँऽ चारि भाई रहैत अछि तऽ
एक ने एक दिन अलग हेमैये पड़ैत छैक ।

राजीव : तो चुपकर माय ।

आकाश : माँजी ठीके कहि रहल छथि राजीव । अलग तऽ एक ने
एक दिन हेमैये पड़ितेएह ।

राजीव : बड़ भऽ गेल, आ चुप करू भैया। लोक सुनत तऽ की कहत। छोटका भाई कमाई खटाई लगलैक, जेठका भाई कें भिन्न कऽ देलकैक। तें हेतु जे भेल से भेल, ''हार मानी, झगरा छूटे'' बिसरू बात सबके हम ओहिठाम जाइत छी, अहूँक लेल नौकरी-चाकरी ताकब जँऽ जोगार-पाती लागि जायत तऽ हम अहाँकें चिट्ठी लिखब। चिट्ठी पबैत देरी विदा भऽ जायब।

सुमित्रा : इ एकटा बात भेलैक ने भिन्न भेलाक बाद ने भाइक उपकार करैत छैक।

राजीव : तो तहन सँऽ भिन्न-भिन्न किएक जपैत छाँ पता नहि। हँ जामे काल तक कुनू जोगार पाती अहाँक नहि बैसैत अछि, तत्काल अहाँ गाम पर रहि एहि ठामक काज-उद्यम करू। तामे हम हर महिना अहाँक नाम सँऽ दू सौ आ भौजीक नाम सँऽ एक सौ टाका अलग सँऽ पठायब। माय ई पाई हिनका सबकें भेट जेबाक चाही। एखनहि नौकरी-चाकरी करैए लागब सबटा ठीक भऽ जायत। एहि **कलहक** कारण थीक टाका। बात खतम, फेर हम भिन्न शब्द अहाँ सबहक मुँह सँऽ नहि सुनह चाहैत छी।

आकाश: *(किछु सौचि)* ठीक अछि। परन्तु माँ बाबूजी के कने नीक जकाँ बुझा कऽ कहि दियौन्ह जे किछु बात रहैन्हि तऽ हमरा सँऽ कहता। किएक तऽ खराब वा नीक ओ हमर पत्नी छी। अग्निक समक्ष सप्तत खा कऽ, ओकर माँग मे सेनुर भरने छी जे सुख-दुःख मे सदिखन एकीकार भऽ रहब।

राजीव : *(माय सँऽ)* एकटा बात तोरहुँ सँऽ। भौजी सनहक सहनशील

पुतोहु तोरा भेटल छौक। एहन पुतोहुक लेल लोक भगवान सँऽ पूजा-अर्चना करैत अछि।

सुमित्रा : रौ बौआ गाम मे नहि रहैत छाँ तें एहन बात मुँह सँऽ निकलैत छौक। दू मास गाम मे रहिकऽ देखही, के केहन अछि सबटा पता चलि जेतौक।

आकाश : हाँ माँजी आरती बहुत खराब अछि। एक बेर कहलहुँ तऽ खराब वा नीक ओ हमर पत्नी छी। जकरा बदलल नहि जा सकैत अछि। कतबो खराब अछि, हमर पत्नी वैएह छी, तेऽ हमरा लेल ओ सबसँऽ सुन्नरि अछि।

सुमित्रा : सुन्नरि छौक तऽ चान मामा आनि कऽ दहीन।

राजीव : छोरु आब इ कटाक्ष बात सब। रिक्शा वाला कें कने जल्दी देखियौक। आब देरी होइत अछि।

[आकाशक प्रस्थानक मुद्रा]

प्रकाश विलीन होइत अछि।

अंक : दोसर / दृश्य : तेसर

[सुमित्रा एकटा खाट पर बैसि माला जपि रहल अछि। किछु समय माला जपलाक बाद ठार होइत अछि फेर सोचैत टहलैत अछि। गहन चिन्तनक बाद आवाज दैत अछि।]

सुमित्रा : कनियाँ, कनियाँ छी....कान मे तूर तेल दऽ केए सुतल छी?

कोमल : *(प्रवेश)* की कहैत छथि।

सुमित्रा : कनियाँ, एहि सँऽ बढ़ियाँ मौका कहियो नहि हाथ लागत। बड़ा उत्तम समय पैरि लागल हें। भनहि राजीवक चिट्ठी आयल, आकाश शहर चलि गेल।

कोमल : माँजी इ की कहि रहल छथि । हम नहि बुझि रहल छियैन्ह ।

सुमित्रा : जानि नहि घर मे जन्म लेलहुँ की जंगल मे । अहाँ सँऽ बेसी बुद्धि तऽ जंगल मे जन्म लेनिहार जानवर कैं होइत छैक । अहूँ कैं बुद्धि नहि अछि । दूनू हिस्सा की ओहिना पाबि लेब ।

कोमल : की कहैत छथि करक लेल कहउथ ने, हम तऽ करक लेल तैयारे छियैन्ह ।

सुमित्रा : *(चिन्ता करैत)* ओकरा पेट में बच्चा पलि रहल छैक । किछु दिन जँऽ एहि घर में ओ मौगिया आरो टिकि गेल तऽ ओ दिन दूर नहि जे अहाँ घर छोड़ि परा जायब ।

कोमल : माँजी इ बात सब की बजैत छथि—हम पड़ा जायब घर छोड़ि कऽ—हमरा भगायत ओ एहि घर सँऽ ताहि दिन तऽ ओकरा हम आगि लगा कऽ डाहि देबैक ।

सुमित्रा : *(प्रसन्न मुद्रा)* आगि लगा कऽ डाहि देबैक ? हमरा मुँहक बात अहाँ छीन लेलहुँ कनियाँ । येएह बात एखन हमहूँ सोचैत छलहुँ जे अहाँ बाजि लेलहुँ । सोचिते टा नहि छलहुँ मुँह सँऽ निकालैये वला छलहुँ—ताबते अहाँ निकालि लेलहुँ हमर मोनक बात । तऽ एहि शुभ कार्य में विलम्ब जुनि करु कनियाँ । फेर कहियो एहन मौका हाथ लागत की नहिं ।

कोमल : *(डराइत)* की कहि रहल छथि—सत मे आगि लगबैक लेल ? नहिं माँजी इ पाप हम नहिं करब, नहिं इ पाप हम अपना सिर नहि उठायब । दोसरक हिस्सा पाबैक लेल, एतेक नीच काज हमरा बुते नहि कायल होयत । एहन

एखुल्ला राज हमरा नहि चाही माँजी जाहि मे ककरो जान चलि जेतैक ।

चुनमुन : *(प्रवेश)* मशीना पाको.....एकछत्त राज पाबैक लेल तऽ किछु करऽ पर उतरि जाइत अछि लोक । फेर अहाँ हमर प्यारी बहना मशीना पाको.....

कोमल : भैया अहाँ सुनलियैक माँजी हमरा की करक लेल कहि रहल छथि ?

चुनमुन : मशीना पाको.....सबटा सुनिलियैक बहना—एहि मे घबराइक कुनू बात नहि । इ सबटा ईश्वरक लीला थीक ! ईश्वरक लीला !! मशीना पाको.....

कोमल : भैया माँजी कहैत छथि आगि लगा कऽ डाहैक लेल....इ काज हमरा सँऽ नहि काएल होएत....भैया इ घोर अनुचित छी....इ बड़ पैघ अपराध छी । इ काज करै सँऽ माँजी के मना करु भैया ।

चुनमुन : मशीना पाको.....हमर बोहिन भए अहाँ एतेक छोट घटनाक अन्तिम रूप दै मे विचलित आ अधीर किएक भए रहल छी । हमर छोटकी बोहिन इतऽ परमपिता परमात्माक आज्ञा थीक जकर आज्ञाक पालन केनाइ हमर अहाँक कर्त्तव्य अछि । मशीना पाको.....सबटा अपनहि भऽ जायत । निश्चिन्त रहू सबटा अपनहिं भऽ जायत ।

सुमित्रा : *(चुप्पी तोरैत)* कपार सबटा अपनहि भऽ जायत । कने अपन अबुद्धि बोहिन कैं बुझाऊ । एना मे तऽ कुनू कार्य नहि बनि सकत ।

चुनमुन : मशीना पाको.....सब कार्य बनि जायत माँजी सब कार्य बनि जायत । एतेक जल्दबाजी जुनि करु । एहि जल्दबाजी

मे बनलो कार्य बिगड़ि जायत । मशीना पाको.....एखन ओ मौगिया अछि कतह ?

सुमित्रा : नहाइत अछि ।

चुनमुन : मशीना पाको.....कोमल तखन शुभ कार्य मे विलम्ब आ बाधा जुनि करह । जाह मटिया तेलक डिब्बा आ दिया-सलाई नेने आवह । मशीना पाको.....

कोमल : *(अकचकाइत)* मटिया तेलक डिब्बा....दिया-सलाई इ सब की होएत भैया ? की एहि चक्रव्यूहक रचना करै मे अहूँक हाथ अछि भैया ? एहन अन्याय जुनि करु ओ असगर नहि अछि—ओकरा पेट मे एकटा अबोध आ मूक बच्चा पलि रहल अछि । एहन अपराध जुनि करु । गायक घर मे आगि जुनि लगाऊ ।

चुनमुन : *(किछु कड़ा भय)* बस आब बन्न करु भभटपन आ जे काज करक लेल कहलहुँ से जल्दी सँऽ पूरा करु ।

सुमित्रा : *(कोमलक करीब जाइत)* मटिया तेलक डिब्बा आ सलाई अनैक लेल कहलइथ ।

[कोमल थरथराइत, आगा-पाँछा तकैत धीरे-धीरे प्रस्थान करैत अछि ।]

सुमित्रा : नहेलाक तुरन्त बाद ओ तुलसीक चौड़ा मे जल ढारक लेल जरूर आयत । तखनहि मुँह मे अंगपोछा ठूसि ओकरा ऊपर मटिया तेल छिड़कब फेर सलाई खररि देह पर फेक देबैक । घर में धकेल के घर बन्न कए देबैक । हल्ला केनाई शुरू करब लोक जमा होयत ।

चुनमुन : मशीना पाको.....लोक तऽ निश्चित जमा होयत कारण जोर-जोर सँऽ हल्ला जे करब । परन्तु लोक कें कहबैक

की । चुप किएक भए गेलहुँ बाजू ने लोक जे जमा होयत ताहि लोक कें कहबैक की ?

सुमित्रा : हुँह, लोक के, लोक के कहबैक इ मौगिया आकाश के गाम सँऽ नहि जाइक लेल कहैत छल परन्तु एकर बात नहि मानि आई ओ गाम सँऽ अपन भाई लग चलि गेल ताहि बिख सँऽ इ एहन काज केलक ।

चुनमुन : मशीना पाको.....ठीक आइडिया, गुड आइडिया । मशीना पाको.....एहन खोपड़ी तऽ डाक्टरो इंजीनियर कें नहि रहैत अछि—जेहन अहाँक एहि उम्र में अछि ।

सुमित्रा : हमरा खोपड़ी सँऽ की होयत, कने खोपड़ी ठीक करु अपना बोहिनक ।

[सुमित्राक एहि संवादक संग-संग कोमलक प्रवेश, हाथ मे मटिया तेलक डिब्बा आ दिया-सलाई अछि । कोमलक डेरायल चेहरा साफ एकर विरोधक आभास देखवैत अछि ।]

चुनमुन : मशीना पाको.....माँजी कोमलक एखन ननिमत बुद्धि छैक । धीरे-धीरे समयानुसार सबटा अपनहिं बुझि जायत । मशीना पाको.....

कोमल : *(डराइत)* भैया ओकरा आगि लगा कऽ डाहि देबैक । आइ ओ एहि दुनिया सँऽ चलि जायत । नहि भैया अहाँ के हमरे सप्पत छी एहन अनुचित कार्य जुनि करु ओ हमर की बिगाड़ैत अछि ? एहन सम्पत्ति हमरा नहि चाही । नहि बनए चाहैत छी एहन सम्पत्तिक मलकानि हम भैया । हमर बात मानू भैया हमरा बड़ डर लगैत अछि ।

सुमित्रा : सुनैत छी अपन बोहिनक गप्प-शप्प । इ तऽ महिनोक बनायल योजना कें क्षण भरि मे नष्ट करय चाहैत छथि ।

[चुनमुन कोमलक हाथ सँऽ मटिया तेलक डिब्बा आ सलाई लड लैत अछि ।]

चुनमुन : *(सुमित्रा सँ)* लियह मटिया तेलक डिब्बा *(कोमल सँऽ)* आर अहाँ लियह बोहिन दिया-सलाई । अहाँ दूनू गोटा कने ध्यान सँ सुनु हमर बात । हम ओकरा तुलसी चौड़ा लग सँऽ मुँह में गमछा बान्हि एतह आनब, एतह अनलाक बाद ओकरा हम कसि के पकड़ब *(सुमित्रा सँ)* अहाँ जल्दी-जल्दी सँऽ इ डिब्बा मेंका पूरा मटिया तेल ओकरा शरीर पर छिड़कि देबैक । *(कोमल सँ)* आर अहाँ मटिया तेल छिड़कला बाद तुरन्त क सलाई खररि ओकरा देह पर फेकि देबैक बस किछुए समय मे हमर सबहक योजनाक सफल एवं अन्तिम रूप प्रकट भऽ जायत ।

[आरतीक अबैक आहट होइत अछि । तीनू गोटा सतर्क भऽ जाइत अछि, संवाद कनफुसकी रूपें बाजल जाइत अछि ।]

कोमल : साइद ओ अबैत अछि ।

[सुमित्रा तेलक डिब्बाक मुन्ना खोलैत अछि ।]

सुमित्रा : कनियाँ जेना-जेना करक लेल कहलइथ से झट-झट करब । ओहि मे विलम्ब नहि हेबाक चाही ।

कोमल : माँजी हमरा सँऽ ओकरा देह मे आगि नहि लगायल होयत ।

सुमित्रा : आब जे बात हम ठानि लेने छी ओ करबे टा करब । बाधा जुनि करु ।

कोमल : तऽ फेर हमरा मटिये तेल दऊथ । सलाई ई लऊथ । हिनकर आत्मा बड़ कठोर छन्हि, हिनके बुते इ काज भऽ सकैत अछि ।

चुनमुन : आब कने बांजव आस्ते करु । माँजी अहीं सलाइक कठरा पकरु । मटिया तेल कोमलक हाथ कऽ दियौक ।

[सुमित्रा आ कोमल अदला-बदली करैत अछि । आरतीक प्रवेश केश खुजल अछि, एक हाथ में फूल सँऽ भरल फुलडाली एवं अगरबत्ती अछि तऽ दोसर हाथ मे जलक लोटा अछि । आरती तुलसी चौड़ाक समीप बढ़ैत अछि । पाँछा चुनमुन अभिनय करैत चलैत अछि । आरती तुलसी मे जल ढारह लगैत अछि । चुनमुन अपन कान्ह पर सँ अंगपोछा उतारि मुँह मे कोचि बान्हि दैत अछि आरतीक लाख विरोधक बादो चुनमुन नहि छोड़ैत अछि । खीचा-तीरीक बीच आरती बचाव करैक स्थितिक संवादक प्रयोग करैत अछि चुनमुन मंचक मध्य अनैत अछि । मुँह आरो बढ़ियाँ जकाँ बान्थैत अछि कोमल डराइत मटिया तेल छिड़कैत अछि सुमित्रा सलाई खररि आँचर पर फेक दैत अछि । चुनमुन सलाईक काठी फेकैत संग आरती सँऽ अलग भऽ जाइत अछि । तखनहि आकाशक प्रवेश देखि चीखैत— *आरती ।* ***कहैत दौड़ैत अछि । खाट ठाढ़ रहैत अछि जाहि पर बिछावनक संग कम्बल सेहो राखल रहैत अछि । आकाश कम्बल लय आरती के ओढ़ावैत अछि । आकाश प्रवेशक समय मे सुमित्रा एवं कोमल के धकेलैत आगाँ बढ़ैत अछि । चुनमुन एकटा हास्यास्पद रूपे पड़ाइत प्रस्थान करैत अछि । आरती के एक बेर फेर मंचक मध्य अनैत अछि ।]***

आकाश : आरती ! आरती अहाँ ठीक छी ने । हम आबि गेलहुँ आरती आब किछु नहि होयत । हम कहैत छलहुँ ने असगर छोड़ि कऽ नहि जायब । देख लेलहुँ ने । जँऽ हम एखन एतह नहि अवितौहुँ तऽ की होइत अहाँकेँ आरती ? *(कानह लगैत अछि ।)*

[सुरेश्वर बाबूक प्रवेश पाँछा लुटन काका सेहो रहैत छथि । स्थिति देखि लुटन कान्ह परहक गमछा मुँह पर लए के गुम भए देखैत रहैत छथि आरती के खाट पर बैसाइ दैत अछि ।]

आकाश : *(कनैत उच्चस्वरे)* लुटन काका ! एखनहुँ उचित बाजब की नहि ? हमर आरती के ई तीनू गोटा मिलकऽ आगि लगवैत छल । बाबूजी इएह घटना केँ रूप दैक लेल हमरा

बाहर पठवह चाहैत छलहुँ ने ? इएह खेल खलाइक दुआरे हमरा एतह सँऽ भगावह चाहैत छलहुँ ने ?

सुरेश्वर : की भेल ! एना किएक व्याकुल छह ? तों घुरि के किएक आबि गेलह ?

आकाश : *(कनैत)* बाबूजी, इ सब मिलिके हमर आरती कें जान सँऽ मारह चाहैत अछि । आरती एहन कोन अपराध अहाँ सबहक केलक ? कोन एहन विघ्न एहि घरक कऽ रहल अछि जे ओकर जिनगीक पाँछा पड़ल छथि इ सब । जँ हम एतह एखन नहि अवितहुँ तऽ कोन घटना घटितए से नहि जानि । *(जोर-जोर सँ कानह लगैत अछि ।)*

सुरेश्वर : इ सब कि भेल फेर अहाँ रास्ता सँऽ घुरि कऽ किएक आबि गेलहुँ ?

आकाश : हमरा स्टेशन पहुँचय मे देरी भऽ गेल । ताधरि गाड़ी खुजि गेल छल । हम आपस आबि गेलहुँ । एतह पहुँचलाक बाद जे दृश्य हमर इ आँखि देखलक से कहल नहि भऽ रहल अछि । ई तीनू गोटा मिलि, हमर असगर आरती कें पकड़ि आगि लगवैत छल । बाबूजी जँऽ बड़ पैघ अपराध ई करैत अछि एहि घर मे तऽ हमरा कहितहुँ वा हमरा समक्षे मे अहाँ स्वयं एकरा मृत्यु दण्ड दैतियैक तऽ हम एकबेर विरोध नहि करितहुँ । परन्तु असगर असहाय आरती कें निर्मम हत्याक एहन षड़यन्त्र ई लोकनि किएक रचलथि ?

[सुमित्रा इसारा सँऽ कोमल के किछु कहैत अछि ।]

कोमल : बाबूजी, भैया जे किछु एखन बाजि रहल छथि सबटा झूठ छी, ओ आवेश मे सत्यता के बिनु बुझनहिये आरोप सिद्ध करए चाहैत छथि ।

सुरेश्वर : तऽ की सत्य छी अहीं बाजू ने ? जँऽ इ बात मे कनियो सत्यता होयत तऽ एखनहिं सबके आगि लगा कऽ डाहि देब ।

कोमल : बाबूजी, सत्य तऽ ई छी—बोहिन शहर जाई सँऽ भैया कें मना करैत छलखिन्ह, तकराबादो बोहिनक बात कें काटि भैया गाम सँऽ आइ चलि गेल रहइथ ओही आवेश मे आबि कए बोहिन इ काज केलइथ, जँऽ हम सब एखन नहि रहितहुँ तऽ कल्पनाक बाहरक घटना एतह घटितए ।

सुमित्रा : ओतऽ संयोग नीक छल सब गोटा अंगना मे छलहुँ नहि तऽ आई माथक पाग खसि कऽ रहितए ।

आकाश : *(आवेसित)* इ बात झूठ छी बाबूजी, इ सबटा मिथ्या छी कनियाँ आ माँजी दूनू गोटा झूठ बाजि रहल छथि । हमर आरती एहन बात कहियो नहि कऽ सकैत अछि ओ एतेक कमजोर आ असहनशील नहि अछि । आरती जिनगी सँऽ हारि नहि मानि सकैत अछि, इ सबटा झूठ छी बाबूजी सबटा झूठ । *(कानैत अछि ।)*

सुरेश्वर : एतेक व्याकुल भेनाई जरूरी नहि छैक । तो अपना मोन के स्थिर करह । कनिये कें बजैक लेल कहुन की सत्य छी ?

[आरती कम्बल ओढ़ने टुकुर-टुकुर तकैत रहैत अछि ओहि तरहे जेना कोनो ओकरा सुधि नहि अछि ।]

आकाश : मुँह किएक सीने छी आरती । बाजू आरती, आई सबटा बात खुलि के बाजू राखू ताक पर एहि घरक मान मर्यादा कें । उगलू मुँह सँऽ घटल अत्याचारक षड़यंत्र कें । हटा दियौक सबंहक मुँह सँऽ मुखौटा । देखह दियौक लोक कें असल छुपल चेहरा ।

[आरती पर कोनो प्रभाव नहि परैत अछि ।]

सुरेश्वर : बाजथु कनियाँ, सबहक मुँह एतह खुजि चुकल अछि हमरा विश्वास अछि, इ झूठ नहि बजती, हिनके पर सबटा छोड़ैत छी ।

आरती : *(उठैत)* बाबूजी ! माँजी, आ कनियाँ दूनू गोटा एखन किछु बजलइथ वेएह बात सत्य छी । हम हिनका बिन रहि सकैत छी । हम हिनका संगहि जाइ चाहैत छला तकराबादहुँ हमर बात कें आई काटि चलि गेल रहइथ अपन बात नहि बनलाक कारणे आत्महत्या करैक प्ला बनेलहुँ । तकरे परिणाम एतेक भेल । ओ तऽ संयोग नी छल माँजी, कनियाँ, कनियाँक भाई एतह समय सँऽ मज भगेलइथ नहि तऽ पुलिस-दरोगा एखन तक पहुँचल रहैत

(बैसि जाइत अछि ।)

आकाश : आरती, एतेक झूठ बजैक लेल किएक वेवस छी बाबूजी आरती झूठ बजैत अछि । Please आरती ए बेर सत्य बाजू ने ? ऽ सब सत्य नहि भऽ सकैत अछि

आरती : अहाँ निश्चित आवेश में छी । अहाँ माँजी, कनियाँ, चुनमु भैया सबके गलत साबित करह चाहैत छी । हिनके स लए तऽ एहि घरक निर्माण भेल अछि । अहाँ शान्त भ जाऊ हम जे केलहुँ ताहि लेल अहाँ सँऽ क्षमा मांगैत छी दोसर बेर आब हमरा सँऽ किछु नहि पूछब । एकबे कहलहुँ माँजी आ कनियाँक मुँह सँऽ निकलल हर एक बात सत्य छी ।

सुमित्रा : आबो आत्मा के संतुष्टी भेटलैक कि नहि ?

[सुमित्रा कोमल के किछु संकेत सँऽ कहैत अछि ।]

कोमल : *(कनैत)* बाबूजी ! आई हम हुनका फोन करैत छियैन्ह भैया हमरा पर हाथ उठेलइथ हें ।

आकाश : ई सब बात झूठ छी बाबूजी.....

सुरेश्वर : ई काज अहाँ ठीक नहि केलहुँ आकाश ।

आकाश : ई सबटा पूर्व नियोजित कार्यक्रम छी बाबूजी । सबटा झूठ छी । हमरा पर विश्वास करु—कनियाँ पर हम हाथ नहि उठेलियैन्ह हें । कनियाँ झूठ बजैत छथि बाबूजी.....

सुमित्रा : हाँ रौ बौआ एहि घर में तूही दूनू प्राणी टा तऽ सत्यवादी छाँऽ । झूठ बजने नहि हेतौक । हमहू अपन बेटा राजीव कें फोन करैत छियैक । कने आबह दहीन ओकरो, सब कान्हि असूलि लेतौह । यौ बाबू सब एहनो अन्याय होइत छैक यौ—ओ गाम मे नहि रहैत अछि तऽ ओकरा लोक-बेद के दबा के रखबीही रौ ? तो हाथ उठेवही भावो पर रौ ? बाढ़नि लऽ कें झाटि देबौक दूनू प्राणी कें । बाप रौ बाप एहन अनर्थ कतहु नहि भेल छल यौ बाबू सब ।

आकाश : माँजी, अहाँ तऽ एतह छलहुँ—अहाँ देखलहुँ हमरा कनियाँ पर हाथ उठावैत ? बाबूजी एतह हम असगर पड़ि गेल छी । एतह हमर अपन आन बनि गेल अछि । बाबूजी आरती झूठ बजैत अछि । कनियाँ सबटा झूठ बजलइथ । माँजी गलत गवाही दैत छथि । हम हारि मानि गेलहुँ, हम हारि मानि गेलहुँ बाबूजी । विश्वास कऽ लियह, विश्वास कऽ लियह बाबूजी हम कनियाँ पर हाथ उठेलहुँ......

सुमित्रा : आब इ नाटक ठार केने नहि हेतौक ? जकर सप्पत लागै एकरा दूनू प्राणी कें—हमर बेटा आयत तऽ टोकै नहि जहिहएँ । आब कोन मुँह लऽकए टोकवे करवीही रौ ?

(कोमल के पकड़ैत) यौ बाबू-भैया सब एहन अन्याय कतहु नहि भेल छल यौ, से हमरा आंगन मे भऽ गेल यौ ।

[कोमल ठुनकि-ठुनकि कानह लगैत अछि । लुटन जे नाक पर गमछा लए बैसल से क्षुब्ध रहि जाइत अछि । उठि कान्ह पर गमछा लैत अछि—आश्चर्य सत्यता जनैक जाहिर करैत अभिनय प्रस्थान करए लगैत अछि ।]

प्रकाश विलीन होइत अछि ।

अंक : तेसर — दृश्य : पहिल

[कोमल आ सुमित्रा राजीवक आगमनक प्रतीक्षा करैत अछि ।]

सुमित्रा : एतेक देरी किएक भए रहल अछि ? फोन मे तऽ कहने छल अजुका दिन दस बजे गामे पर छी ।

कोमल : फोन आ गाड़ी-घोड़ा मे अन्तर होइत अछि माँजी । भऽ सकैत अछि ट्रेन लेट होयत ।

सुमित्रा : ओ तऽ अबेर-सबेर अएबेटा करत । खाली अहाँ कैं जतेक बात सिखेलहुँ तकर अभिनयक संग संवादक प्रयोग ठीक जकाँ करब । जतेक कहने छी ओतबे बात बाजब आ करब । जँऽ आइ राजीव कैं बुझावह मे सफल नहि भेलहुँ तऽ बूझू बढ़ियाँ जकाँ बदनाम भऽ गेलहुँ ।

कोमल : माँजी हम तऽ पहिनहिं इ काज करै सँऽ बार-बार मना करैत छलियैन्ह । हमर एकटा बात नहि मानि एना केलइथ ।

सुमित्रा : जे हेबाक छल से तऽ आब भऽ गेल । एकबेर हमरा एहि ब्रह्मफॉस सँऽ निकलह दैह तकर बाद हम अकसवा टाटी वाला के देखबैत छी । परन्तु राजीव कैं अपन बस में रखनाइ अहाँक काज छी ।

कोमल : माँजी इ किएक एहिलेल चिन्ता कऽ रहल छथि । जे नारी अपना पति कैं बस मे कऽ नहि रखलक—पति कैं अपना ढंग सँऽ नहि नचेलक तऽ फेर ओ नारी एहि युगक नारी नहि भेल । हिनकर बेटा हमरा बस मे छथि ।

सुमित्रा : हँऽ कनियाँ, अबैत देरी एना के नखरा पसारब की अहाँक हर एक बात पर विश्वास कऽ लियेएह । जँऽ एक बेर अहाँक बात पर हमर बेटा राजीव विश्वास कऽ लेलक तऽ देखब ताल कोन नाच ओ नचायत ।

[तखनहिं राजीवक शहर सँऽ आगमन ओकरा हाथ मे एटैची अछि । कोमल राजीव के देखि मुँह फुला कऽ घुमि जाइत अछि ।]

राजीव : *(माय के गोर लगैत)* गाम पर सब प्रसन्न अछि तऽ । भैया-भौजी कतह गेलइथ अंगना सुन्न लगैत अछि ? एना गाम आबैक लेल हठात अहाँ सब फोन किएक केलहुँ ? बाबूजी ठीक छथि तऽ हमरा तऽ भेल हुनके मोन-तोन खराब भए गेलन्हि । अच्छे एकतरफा बजने जा रहल छी—अहाँ सब एना मुँह पर ताला किएक मारने छी ?

सुमित्रा : रौ बौआ गाम परहक आब बजै वाला बात नहि रहलौ । पहिने अपन कनियाँक दशा देख की बनल छौक ?

राजीव : *(कोमल दीस बढ़ैत)* किएक हिनका की भेलन्हि ? हिनका तऽ गाम खूब बढ़ियाँ लगैत छन्हि । शहर सँऽ तऽ उबि गेल छथि ।

[राजीव कोमल कैं पकड़ैत अछि—स्पर्श होइतहि नखरा करैत कानह लगैत अछि ।]

राजीव : की भेल अहाँ कैं ! बाजू ने की भेल । एतेक दूर रहि हम ककरा लेल अफसियाँत भेल रहैत छी । अहीं सबहक

वास्ते ने ? तकरा बादहुँ जँऽ अहाँ सब हमरा सँऽ प्रा नहि रहैत छी इ तऽ अनसोहांतक बात छी.....चलू सुना अपन कहानी......

कोमल : *(हिचकैत)* हम अहाँक लगिते के छी—कियो नहि लगैत ने । *(कानव फेर जारी भऽ जाइत अछि ।)*

राजीव : फेर खेलाले नाटक खलाय लगलहुँ ने ! आखिर की भेल जे एतेक हवोढ़कार भए के कानि रहल छी ?

कोमल : अहाँक घर वाली कें लोक मारैत अछि । आगि लगा डाहैत.......*(कहैत जोर-जोर सँऽ कानए लगैत अछि ।)*

राजीव : हमर प्राण सँ प्यारी घरवाली पर जे हाथ उठायत तकरा हम खतमे कए देबैक ।

कोमल : तऽ खतम कऽ दियौन्ह गऽ भैया-भौजी कें ?

राजीव : *(आश्चर्य)* भैया, भौजी.......?

कोमल : हँऽ, अहाँक भैया-जकरा अहाँ बाप तुल्य मानैत छी, अ भैया अपना स्त्रीक पक्षे हमरा पर हाथ उठेलइथ । आ अ अहाँक भाऊज जकरा अहाँ माय सँऽ बढ़ि कें मानैत *(कनैत)* ओ माय तुल्य भाऊज.....मटिया तेल ढारि हम आगि लगवैत छल । *(जोड़ सँऽ कानह लागल)*

सुमित्रा : *(कोमल के पकड़ैत)* कनियाँ आब अहाँ एक बेर नहि कानू आब अहूँ कें अपन आबि गेल रक्षा केनिहार । सब बदल सठि जेतैक ।

राजीव : माय साफ-साफ किएक नहि बजैत छें की भेल से ।

सुमित्रा : रौ बौआ हम तऽ अंगनो मे नहि रहियौक रौ । गेल र पोखरि नहाइक लेल । पोखरीक घाटे पर सँऽ सुनलियै हल्ला । लोक सब कहलक अहींक आंगन मे भऽ रह

अछि । कहैत छियौक बच्चा अदंक तऽ पोखरीक घाटे पर लऽ लेलक, नुओ नहि पखारह लगलियौक दौड़लहुँ अंगना दीस कऽ । अंगना जे एलहुँ....बजे वला बात नहि रहलौ आब । *(कनैत)* हमर पुतोहु के अड़गसना अकशवा आ ओ नटिनियाँ मौगी जे छौक अकशवाक कनियाँ मारि कए सनकुट्टा उठा देने छल । मौगिया हमर सोन सनहक पुतोहु कें ऊपर मटिया तेल ढारि आगि लगवैत छल । जँऽ कनियो काल आवह मे देरी करितहुँ तऽ दोसर वियाह तोरा करवह परितऽ ।

[सुमित्रा आ कोमल नाटकीय ढंगक कानव-कानह लगैत अछि ।]

राजीव : *(आवेशित)* चुप करु मुँह कें अहाँ सब । भैया अहाँ पर हाथ उठेलइथ । तऽ आब बुझलियैक सामने किएक नहि आबि रहल छथि ओ सब ? छइथ कतह भौजी-भैया आई बढ़िये जकाँ भऽ जेतन्हि ।

[हलचलाइत प्रस्थान होइत अछि राजीवक । सुमित्रा आ कोमलक एक दोसरक नजरि मिलतहिं मुस्कुराहट आबि जाइत अछि मुख पर ।]

सुमित्रा : अभिनय केनाई तऽ कियो अहाँ सँऽ सिखए कनियाँ ।

कोमल : हिनका सनहक निर्देशिका पाबि कलाकार फुका-मुट्ठी बारह कोना के भऽ सकैत अछि । सबटा तऽ हिनके रचल रास-लीला छियन्हि । हम तऽ बस हिनकर अधिनस्तक बंधुवा कलाकार छी ।

सुमित्रा : आब देखैत रहू ताल आ बजाऊ दूनू गोटा·ताली.....

[राजीव आरती के घसीटैत मंचक मध्य·अनैत अछि । दोसर भाग सँ किछ ग्रामीण स्त्री-पुरुषक प्रवेश संग मे सुरेश्वर बाबूक प्रवेश ।]

राजीव : अहाँ दूनू प्राणी मिलिकऽ हमरा स्त्री पर हाथ उठेलहुँ आ
हम नहि छोड़ब ।

आरती : बौआ कने हमर बात सुनि लियह । बात सूनू बौआ....राजीव
बात बुझि लियह......

राजीव : *(थापर मारैत)* चुप करु, कुनू बात आइ हम नहि सुनब ।

[राजीवक थापरक संग आकाशक प्रवेश होइत अछि । आकाश पर सेहो राजीव हाथ उठा दैत अछि ।]

राजीव : दूर भऽ जाऊ हमर आँखिक समक्ष सँऽ नहि तऽ......

आकाश: *(चिखैत)* राजीव.....*(वातावरण शांत)* अहाँ हमरा पर हाथ उठेलहुँ । बिन बात बुझनहिये माय तुल्य भाऊज पर हाथ उठेलहुँ । अहाँ आरती पर हाथ उठेलहुँ । की अहाँ ए भाऊजक काएल सबटा बिसरि गेलहुँ ? राजीव इ स ठीक नहि केलहुँ । ठीक नहिं केलहुँ इ सब बात राजीव

राजीव : हँऽ-हँऽ, भैया हम जे किछु केलहुँ सबटा सोचि विचारि कें केलहुँ, सब ठीक केलहुँ । एतेक दिन तक हमरा आँखि पर आन्हर जाली लागल छल । भनहि आई ओ आन्हर जाली खुलि गेल । जाहि भाई के हम बाप सँऽ बढ़ि के मानैत छलहुँ—ओ भाई हमरा अनुपस्थिति में हमर स्त्री पर हाथ उठेलक ? जाहि भाऊज कें पूजा करैत छलहुँ ओ भाऊज हमर घरवाली कें आगि लगा कें डाहैक रणनीति अपनेलक ।

आरती : बहुत नीक केलहुँ बौआ, आनि लियह मटिया तेल आ हमरा दूनू प्राणी कें देह पर दऽ कें आगि लगा दियह । बौआ अहाँ गुमराह भऽ जायब हम नहि सोचैत छलहुँ ठीक केलहुँ....

आकाश : बाबूजी, अहाँ चुप किएक छी बाबूजी ? एतह तऽ मात्र एकटा अहाँ कें छोड़ि दोसर कियो नहि अछि हमर । किछु बाजू ने बाबूजी मुँह चुप किएक केने छी । की ओएह सब सत्य छी ने, हमरा संग जे घटल सैह न्याय छी की ? अहाँक आँखिक सोझा राजीव हमरा दूनू प्राणी पर हाथ उठेलइथ । अहाँ सब किछु देखैत चुप रहलहुँ । हम अहाँक बेटा नहि छी ने बाबूजी । अहाँक बेटा सिर्फ राजीव छियथि ने । आरती अहाँक पुतोहु नहि छथि ने । नहि छी ने अहाँक पुतोहु आरती ? बड़ा कष्ट भेल बाबूजी....*(कानय लगैत अछि ।)*

राजीव : बन्न करु नखड़ा आ एहि घर सँऽ अपन झोड़ा-झपटा समटू, जाऊ जतह जेबाक अछि । जाहि भाई-भाऊजक लेल की नहि केलहुँ । दूनू गोटाक लेल हम हर महिना अलग-अलग सँऽ पाई पठवैत छलहुँ—जे भाई बेरोजगार अछि । ओकरा इ नहि अखरहि जे हम पाई नहि कमाइत छी । जाई जाऊ एहि घर सँऽ । जँऽ नहि जायब तऽ हमही सब चलि जायब ।

आकाश : राजीव बाबू एहन अनर्थ बात सब जुनि बाजू । एहि घरक अहाँ खाम्ह छी—अहाँ पर टिकल अछि ई घर । एहि घरक सबटा भार अहाँ सम्हारने छी । अहाँ किएक घर छोड़ि कऽ जायब ? एहि घरक **''कलह''** कें कारण हम दूनू प्राणी छी । तें हेतु हमहीं सब आब घर छोड़ि कऽ जायब । एतेक दिन हमरा दूनू प्राणीक लेल जे अलग सँऽ पाई-कौड़ी पठवैत छलहुँ—जे हमरा एखन अहाँक मुँह सँऽ निकललाक बाद पता चलल हें । खैर पाई पठवैक लेल धन्यवाद । चलू आरती...........

आरती : अहाँ होश मे तऽ छी, की सब बात बाजि रहल छी.....?

आकाश : आरती हम बिल्कुल होश मे छी । बेबूझ वला बात अहाँ करैत छी । एहि घर मे हमरा सबके रहैक कुनू अधिकार नहि अछि । किएक तऽ घर मे रहैक अधिकार ओकरे होइत छैक जे टाका कमाइत अछि—फेर हम तऽ टाका नहिं कमाइत छी । तें जिद्द छोड़ू आ चलू एहिठाम सँऽ.....

आरती : किएक जायब एतह सँ, एतह हमर सबहक हिस्सा नहि अछि ?

राजीव : ठीक अछि रहू अहीं सब । हमहीं सब निकलि जायब ।

आकाश : नहि, नहि अहाँ सब किएक जायब । Please चलू आरती, हम कहैत छी चलैक लेल । आरती अहाँक हर एक बात एतेक दिन मानैत एलहुँ । एकबेर हमरो बात मानू ने चलू एहि घर सँऽ । एक बेर तऽ कहलहुँ इ घर हमर नहि छी । हमर जन्म एहि घरारी पर नहि भेल अछि । हम एतह असगर छी—माई-बाप हमरा लेल सब मरि चुकल अछि ।

[आरती कैं पकड़ि सुरेश्वर बाबूक करीब अवैत अछि–जे कुर्सी पर माथा हाथ दए कऽ बैसल छथि ।]

आकाश : बाबूजी एतेक घटना अहाँक आँखिक सामने मे घटल । अहाँ चुप रहलहुँ बाबूजी । राजीव हमरा दूनू प्राणी पर हाथ उठेलक बिन अपराधक *(कानह लगैत अछि)* अहाँ एक बेर किछु नहि कहलियैक ओकरा । *(कने कानि फेर नोर अंगपोछा सँऽ पोछि लैत अछि ।)* मात्र एहि दुआरे किछ नहि कहलियैक ने ओ पाई कमा के अहाँक हाथ मे दैत अछि । हम नहि कमाइत छी बाबूजी तै हमर सम्मानो ओहिना करैत छी । अहूँ मुँह देखि मुंगवा परसलहुँ ने । ठीक अछि

बाबूजी—आजुका दिन एहि घरक **''कलह''** के अन्तिम दिन छल—आइ खतम भए रहल अछि एहि घरक ''कलह'' कारण हमसब सब दिनक वास्ते एहि घर सँ जा रहल छी ।

सुरेश्वर : *(मन्द स्वर)* जाइक कोनो जरूरी नहि अछि अपन-अपन चुल्हा अलग कऽ लियह । हमहू अलगे रहब ।

आकाश : नहि बाबूजी आइ आब एहि घर सँऽ मोन टूटि गेल । जानि नहि एतेक कष्ट सहलाक उपरान्तो किएक एतेक प्रेम भए गेल छल एहि घर सँऽ जकरा तोड़ि नहि पवैत छलहुँ । एहि घर मे हमरा दूनू प्राणीक हर एक अधिकारक हनन मात्र एहि दुआरे काएल गेल कने हम अर्थक उपार्जन नहि कऽ सकलहु । बाबूजी घर खाली टाके टा सँ नहि चलैत अछि । राजीव बाबू टाका कमेलाइथ तऽ एहि घरक सबटा फैसला करैक हूनके अधिकार भेटलन्हि । हमर सम्पूर्ण हकक हनन केलहुँ । अहाँ अपन नेत नहिं ठीक रखलहुँ ।

[आरती एवं आकाश बारी-बारी सँऽ बाबूजीक पैर छुवैत अछि । अवैत अछि सुमित्राक समीप दूनू गोटा पैर छुवह चाहैत अछि ओ पैर पाँछा खसका लैत छथि ।]

आकाश : माँजी अहाँ कहैत छलहुँ ने ''इ दिन कहिया देखवैक जे तू दूनू प्राणी एहि घर सँऽ चलि जेमाह'' । ओ दिन आबि गेल माँजी । मोन होयत एहि लेल अहाँ तऽ कबुला-पाती सेहो केने छलहुँ ''महादेव कैं घुरियाले पैरे जाकऽ जल चढ़ेवाक—जाऊ चढ़ा आऊ । महादेव अहाँ सँऽ अति प्रसन्न भए अहाँक मोनक बात पूरा कऽ देलाइथ । आब चलैत छी माँजी सब दिनक वास्ते इ घर त्यागि रहल छी—रहू एखुल्ला भऽकए ।

[आरती के आकाश सम्हरैत अछि एवं प्रस्थान करैक रास्ता एकटा छोर पर जाकऽ मूड़ैत अछि ।]

आकाश : *(अन्तिम क्षण)* राजीव बाबू चलैत छी आब । मोन राखब टाका सँऽ लोक नहि कीन सकैत छी । अहाँ लोक के मित मे भूल केलहुँ । *(बाबूजी सँऽ)* जाइत छी बाबूजी । हमर सबहक रहने वा नहि रहने अहाँ के तऽ बराबरे पड़त । तैयो, आरती सेहो जा रहल अछि अपना शरीर पर ध्यान राखब बाबूजी !

[संवाद बजैत आकाश प्रस्थान करैत अछि आरतीक संग । सुरेश्वर उकासी करैत एना के कानव उठवैत अछि जेना ओ आकाशक सब दुःख बुझैत छल परन्तु ओकर निवारन ओकरा हाथ मे नहि छलैक । सुमित्रा, राजीव एवं कोमल हुनका करीब जा कए सम्हारैत अछि । ग्रामीण स्त्री-पुरुष जे मंच पर आयल छलइथ सब आश्चर्य जतवैत बेरा-बेरी प्रस्थान करैत रहैत छथि ।]

राजीव : *(सम्हारैत)* बाबूजी पता नहि हमहूँ की करैत की कऽ बसिलहुँ, तामस-पित पर हमहूँ हदक सीमा कैं तोड़ि देलहुँ । बाबूजी की अहाँ सोचैत छी हमरा कष्ट नहि अछि एखुनका घटना सँऽ ? एक बेर शहर देखह तऽ दियौन्ह । अहाँ कानू नहि सब ठीक भऽ जायत । ओ सब आपस आबि जेताह । हम हुनका सबके आपस आनि देब बाबूजी काननाइ बन्न करु ने ।

सुरेश्वर : *(कानैत)* कानब कोना नहि । आकाश हमर बेटा छी, बेटा—दुश्मन नहि । ओ हमर संतान छी—जहिना अहाँ छी । चलि गेल, अहाँ सब एक बेर ओकरा रोकलहुँ तक नहि । ओ अमानुषक-अमानुषे रहि गेल । हमर बेटा चलि गेल, चलि गेल हमर पुतोहु ।

[उकासी करैत कानव आरो जोर भऽ जाइत अछि ।]

प्रकाश विलीन होइत अछि ।

अंक : तेसर — दृश्य : दोसर

[स्थान : शहरी सरकारी हस्पताल । समय : संध्या । आरती जकरा बच्चा होमए वाला छैक एकटा बेड पर परल अछि । दुचारि टा आरो बेड लागल अछि जाहि पर आरो रोगी परल अछि । नर्सक प्रवेश होइत अछि ओकरा गरदनि मे आला लटकल अछि । हाथ में दवाईक ट्रे अछि । प्रवेशक संग ट्रे टेबुल पर रखैत अछि आ क्रमबद्ध रूपे सँऽ चेकप करैत अछि एवं रिपोर्ट लिखैत अछि ।]

नेपथ्य सँ : आइ आरती आ आकाशक गाँव छोड़ना आठम महिना बीत रहल अछि । शहर एलाक तुरन्त बाद अपन अनपढ़ मित्र योगेशक पूर्ण सहयोग पबैत अछि । योगेशक सहायता सँऽ ओही कम्पनी मे जाहि मे योगेश काज करैत अछि जे एकटा फटक्का बनवैक कारखाना छी—पढ़ल-लिखल रहलाक बादो वेवसता कही वा जुनून एकटा श्रमिकक काज करै पर उतरि चुकल अछि आकाश । अर्थ उपार्जनक खातिर राति-दिन एक बुझि मेहनत करैत अछि । ओकर आब एकेटा सपना छैक खूब पाइ कमा कऽ अपना पैर पर ठार होइक ।

[नर्सक क्रमबद्ध रूपे चेकप जारी रहैत अछि जे एखन आरतीक भऽ रहल अछि ।]

नर्स : तुमी को कोई देखने को नहीं आस्चे ।

आरती : *(मुड़ी हिला कऽ)* हाँ आते हैं ।

नर्स : के आस्चे तुमको देखने को ।

आरती : मेरे पति आते हैं ।

नर्स : तुम एकला रहती हो इस शहर में, माने मेरो कहने का है तुमी अपने पति के साथ एकला रोहती हय ?

आरती : *(उठि बैसैत)* हाँ नर्स आन्टी ।

नर्स : अच्छा सोमझ गया ये तो आजकालेर स्टायल हो गाया हय । थोड़ा पोयसा की कमाने लगा की माँ बाप को छोड़कर Wife को साथ लेकर रहने लोगता हय । आमारा कहने का है एखुन यदी तुमी माँ बाप के पासे होती तो कुछ कस्टो तो नहीं होता ?

आरती : ऐसी बात नहीं है नर्स आन्टी । आपका ये इल्जाम है की हमलोग माँ बाप को छोड़कर आ गये हैं ? सरासर झूठ है । हमलोग माँ-बाप को नहीं छोड़े हैं । दरअसल सत्य तो ये है कि माँ बाप ही हमलोगों को छोड़ दिये हैं ।

नर्स : ये सुनो—माँ बाप कभी सन्तान को छोड़ा है ? तुम्हारा ऐ कोथाई आमी विश्वास कोरबो नही । अच्छा बोलो तुमी, केनो छोड़ा तुमलोगो को माँ-बाप ?

आरती : *(बहाव में)* हाँ नर्स आन्टी मैं सच बोलती हूँ । मेरा पति और मैं गाँव में रुखी-सूखी खाकर खुश रहते थे । हमदोनों को गाँव से बहुत लगाव था । पर मेरी सास जो सगी नहीं है, उन्हें मेरी खुशियाँ बर्दास्त नहीं हुई ।

नर्स : अब सुनो सासरी को खुसी भालो लागा नहीं । सासरी भी कहीं गैरो होती हय ?

आरती : मेरी बात तो सुनिये । मेरी अपनी सास वे जब छोटे थे तभी मर गई वो, फिर उनके पिताजी दूसरी शादी कर ली । मैं तो उन्हें भी अपनी माँ की तरह पूजा की । पर वे मुझे बहू नहीं बनाई । अपनी बहू और बेटे के लिए वो हमारी जान लेने पर उतर गई । मजबूरी बस हमलोग गाँव छोड़कर शहर आ गए ।

नर्स : अच्छा, अब कोथा टा माथाई ढुका । तोमाके भूल बुझलाम । माँफ कोरबी । तुम्हारा हसबेन्ड कोरता क्या हय ?

आरती : यहीं पटाखा बनाने के एक कारखाना में मजदूर का काम कर रहे हैं ।

नर्स : बाजी बनाने के कारखाने में काम कोरता हय ? केनो से पढ़ा सुनी नहीं किया हय ?

आरती : वे I. Com. passed हैं ।

नर्स : तबे पटाखा कम्पनी.......

आरती : क्या करते, वे शहर पहली बार आए हैं । कोई जान पहचान नहीं है । जिन्दगी जीने के लिए पैसे की सख्त जरूरत थी । अनपढ़ देवर जो इसी में काम करते थे उन्होंने ही Help किया । हमलोग शहर में टिक सका ।

नर्स : तुम भी तो पढ़ी लिखी लोगती हो ।

आरती : जी नर्स आन्टी मैं B. A. passed हूँ ।

नर्स : ताले किसी स्कूले सिखके कार्य कोरते पारते ।

आरती : मैं तो ऐसा ही चाहती थी पर वो ऐसा नहीं चाहते हैं की मैं नौकरी करूँ । मैं उनके बात को कैसे काट सकती हूँ ।

नर्स : किधर तुमलोगों का देश है ?

आरती : मिथिलांचल.......

नर्स : तुमार देशे लोक यही एकटा बुरा बात हय । अरे बाबा आमी कहती क्या होर्जा है नौकरी करने में । पढ़ी-लिखी आचो । ठीक आचे आने से हमको देखा करवाना । एकटा स्कूले आमार जान-पहचान आचे । तुम दोनों को सेई स्कूले राखिये देंगे ।

आरती : पर वो तो सुबह में मिलेंगे । अभी Night duty करते हैं ।

नर्स : ठीक आने सकाले आसले, आमार संगे देखा कोरते बोलना ।

[डॉक्टरक प्रवेश, नर्स Report Chart लऽ कऽ डॉक्टर के दैत अछि । एक-एक कऽ के देखैत अछि । नेपथ्य मे विस्फोट होइक आवाज अवैत अछि जे किछु काल चलैत अछि । विस्फोट शांत भेलाक बाद फोनक घंटी बजैत अछि । डॉक्टर इशारा सँऽ नर्स कैं फोन उठवैक लेल कहैत अछि । नर्स जाकऽ फोन उठवैत अछि ।]

नर्स : Hallo....Hallo....Yes government Hospital.... One Minits..... *(डॉक्टर सँऽ)* Sir आपका फोन ।

[डॉक्टर आबि नर्सक हाथ सँऽ फोन लैत अछि ।]

डाक्टर : Yes बोल रहा हूँ ।.....ठीक है....भेजिए जहाँ तक होगा व्यवस्था करेंगे । *(फोन राखैत अछि । नर्स सँऽ)* Sister....

नर्स : Yes Sir.......

डॉक्टर : श्रीराम पटाखा कारखाना में भारी विस्फोट हो गया है । घायलों को यहाँ लाया जा रहा है । जितनी जल्दी हो अधिक से अधिक बेड की व्यवस्था करवाओ ।.......

[डाक्टर आ नर्सक दीस अकचकाइत आरती निहारैत अछि । नर्स आरतीक तरफ देखैत प्रस्थान करैत अछि ।]

आरती : क्या बात है डॉक्टर ?

डॉक्टर : नहीं, नहीं, कुछ नहीं, आपको आराम की जरूरत है । आप आराम कीजिए ।

[नेपथ्य सँऽ एम्बूलेंसक आवाज गुंजैत अछि । मंच पर घायल सबके एक भाग सँऽ प्रवेश करवा दोसर भाग द'कऽ प्रस्थान करैत अछि । इ हाथ खटिया पर करायल जाइत अछि । किछु क्षणक बाद एक कात योगेश आ दोसर भाग हस्पतालक कर्मचारी द्वारा एकटा हाथ बेड पर सुतल जे आकाश रहैत अछि ।

ओकरा चेहरा पूर्ण रूप सँऽ जड़ल अछि । ओ छटपटा रहल अछि । योगेश के देखि आरती अपन बेड सँऽ उतरैत अछि ।]

आरती : *(योगेश सँऽ)* की भेल योगेश । के छी सुतल एहि पर ? अहाँ बजैत किएक नहि छी ? ककरा की भेल हें ? *(योगेश चुप रहैत अछि)* अहाँ चुप्प किएक छी ?

[आरती आकाशक शरीर सँऽ ओढ़ायल चद्दरि उठवैत अछि । आकाश के देखि बफारि काटि कानह लगैत अछि । डॉक्टर पकड़ि बेड पर लऽ जाय चाहैत अछि परन्तु आरतीक पागलपन जोर पकड़ि लेने अछि । डॉक्टर Sister कैं आवाज लगवैत अछि । नर्सक प्रवेश होइत अछि । दूनू गोटा मिल आरती कैं बेड पर लऽ जाइत अछि । आकाश कैं लऽ कैं आगाँ बढ़ैत प्रस्थान करैत अछि ।]

डॉक्टर : आप क्यों रोती हो ? वो कौन था आपका ?

आरती : *(कनैत जोर सँऽ)* He is my husnabd. वो मेरे पति हैं । *(डॉक्टरक पैर पर खसैत) Please Doctor* मेरे पति को बचा लीजिए । मेरा इस दुनियाँ मे सिवा उनके कोई नहीं है । यदि उन्हें कुछ हो गया तो फिर मैं कहीं की नहीं रह जाऊँगी ।

[एहना स्थिति मे डॉक्टर एवं नर्स ओकरा सांत्वना दैत अपना मोन सँऽ संवादक प्रयोग करैत छथि । एहिये बीच मे योगेशक प्रवेश होइत अछि । योगेश के देखि डॉक्टर किछु शांत महसूस करैत अछि ।]

डॉक्टर : *(आरती के थमावैत)* Please इन्हें सम्हालिए । Sister Com....... *(डॉक्टर एवं पाँछा नर्सक प्रस्थान)*

योगेश : भौजी, कनला सँऽ परिस्थिति के बदलल नहि जा सकैत अछि । जँऽ एहि पागलपन सँऽ समस्या सुलझि नहि सकैत अछि तऽ फेर किएक ई बेहताशापन । भगवानो अहाँ सबके परीक्षाक घड़ी में डालि देलक । सबटा ठीक भऽ जायत भौजी, सबटा समयक फेरा छी ।

आरती : अहाँ हमरा साफ-तरहे किएक नहि कहैत छी की भेल । ओ ठीक छथि की नहि....?

योगेश : *(विचलित)* भौजी अहाँ चिन्ता नहिं करु । आकाश के किछु नहि होयत । ओ ठीक भऽ जायत । कम्पनी मे विस्फोट भए गेल । कतेको लोक मरि गेल । कतेको घायल अछि । शहरक सब अस्पताल भरल अछि । हम तऽ बार-बार मना करैत छलियैन्ह रातुका ड्यूटी करै सँऽ, तकरा बादो रोज-रोज हमर बात काटि चलि जाइत छलाइथ । भावीक विनास के कऽ सकैत अछि ।

[तखनहि उज्जर कपड़ा सँ ढकल अस्पताल कर्मचारी एकटा मुर्दा आनि जमीन पर राखि चलि जाइत अछि । जकरा देखि अधीर भऽ जाइत अछि । आ लाशक निकट जाइ लगैत अछि । योगेश आरती के सम्हारैत अछि ।]

योगेश : अहाँ धीरज राखू भौजी...इ अप्पन आकाश नहि भऽ सकैत अछि । किछु नहि होयत अपना आकाश कें । एखन तऽ आकाशक एकटा सपना नहि पूरा भलए, भौजी अहाँ एना अधीर जुनि होउ ।

[दूनू गोटा लाशक करीब पहुँचैत अछि । योगेश कपड़ा हटा कें देखैत अछि । आकाश नहि रहैत अछि । आरती थोरे सम्हरैत अछि ।]

योगेश : हम तऽ पहिनहि कहलहुँ अपन आकाश नहिं छी । अपना आकाश कें किछु नहि होयत ओ हमरा सबके छोड़ि नहि जा सकैत अछि ।

[फेरो एकटा मुर्दा आनल जाइत अछि । एक बेर फेर आरती धीरज हरवैत अछि ।]

योगेश : भौजी, अहाँ अपन आत्म-बल कें सक्कत केने रहू । इ हस्पताल छी एतह जीवन-मृत्युक खेला चलैत अछि । अहाँ तऽ हर एक मुर्दा कें आकाश बुझैत छी । अहाँक एहि भय सँऽ बनल कल्पना पर कोना के विश्वास करु । हजारक हजार सपना हमर मित्र तैयार कयने अछि-जकरा यथार्थ रूप देनाई छैक । तकरा बिन पूरा केने....अहाँ एहन बात सब सोचैत केना छी ?

[मुर्दाक करीब पहुँचैत अछि । साहस जुटवैत आरती मुख सँऽ कपड़ा हटवैत अछि—आकाश रहैत अछि ।]

आरती : *(पागलपन भरल कानब)* राजा जी यौ राजा जी । हमरा छोड़ि कऽ कतह चलि गेलहुँ यौ राजा जी । अहाँ तऽ कहैत छलहुँ हम असगर छोड़ि कतहुँ नहि जायब—किएक एतेक झूठ बाजलहुँ यौ राजा जी । आब हम ककरा पर जीव यौ । एतेक दिन हम दुःख कटलहुँ कहियो किछु नहि बजलहुँ यौ राजा जी ।

[आरतीक एहि पागलपन मे ओकर हाथक चुड़ी फूटि जाइत अछि । कपार मे चोट लगैत अछि जाहि सँ शोणित बहराइत अछि । योगेशक आँखि सँऽ नोरक धार छुटल अछि तकराबादो आरती के सम्हारैत मे व्यस्त अछि । नहि सम्हलला पर नर्स, डॉक्टर कऽके आवाज उच्च स्वर मे लगवैत अछि । डॉक्टर एवं नर्सक प्रवेश होइत अछि ।]

डॉक्टर : क्या, Oh my god ये इसका Husband था । Sister.....

नर्स : Yes Sir.......

डॉक्टर : जितनी जल्दी हो इस महिला को Operation Theater में ले चलो । इस बच्चा को बचाना जरूरी है ।

[डॉक्टर आ नर्स आरती के पकड़ि लऽ जाय चाहैत अछि ।]

आरती : हट जाओ तुम लोग । तुमलोगों ने मेरे पति को मार डाला। मेरा एक ही सहारा था उसे भी छीन लिया । I hate you doctor. I hate you.....*(योगेश सँऽ)* छोड़ि दियह हमरा आब हम ककरा लेल जीब । आब हम नहि जीवह चाहैत छी । राजा जी हमहू आबि रहल छी ।

[एही खींचम-तोरीक बीच आरती बेहोश भऽ जाइत अछि । बेहोशक अवस्था मे आरती कैं लऽ कए नर्स आ योगेश प्रस्थान करैत अछि । पाँछा सँऽ डॉक्टर सेहो प्रस्थान करैत अछि । किछु क्षणक बाद योगेशक एक बेर फेर प्रवेश होइत अछि । आकाशक पार्थिव शरीर लग जाइत अछि ।]

योगेश : *(कोढ़ फटैत स्वर)* इ की केलहुँ । इ नीक काज नहि केलहुँ आकाश । अपना स्थितिक जिम्बेदार एहि अनपढ़ मित्र के बना गेलहुँ । एहन संकट कैं घड़ी मे भौजी के असगर छोड़ि अहाँ चलि गेलहुँ । के बनतैक ओकर संकट मोचन । ओ तऽ सारा जिनगी गाम मे बितबह चाहैत छल । एहन शहर देखाबाक कोन जरूरी छल । बलजोरी शहर अहाँ अनलियैक असगर सुनसान राह मे छोड़ि कें गेनाई इ ठीक नहि केलौहुँ आकाश । *(भगवानक तस्वीर टांगल अछि ओहि ठाम जा के ।)* हे परम पूज्य परमेश्वर ! हे जगपति अन्तर्यामी ! बहुत खूब—खूब नीक तमासा रचलहुँ । अहूँक लेल सब सँऽ सस्ता गरीबक, निःसहायक जिनगी होइत अछि । अहूँ उजड़ले घर उजाड़ैत छी ।

[नेपथ्य सँऽ जनमल बच्चाक चिचयाईक आवाज अवैत अछि ।

हे लीलाधारी ईश्वर ! कम सँऽ कम बच्चा आ ओकर माय आब ठीक रहैक । ओ बच्चा आकाशक अन्तिम निशानी छी । भौजीक सपना छी । आकाशक रूप छी । जाहि लऽकए भौजी गाम जेतीह ।

[डॉक्टरक प्रवेश चिन्तित अवस्था में । किछु क्षण चुप रहैत अछि। योगेश डॉक्टरक मुँह निहारैत अछि ।]

योगेश : डॉक्टर बाबू.......बच्चा ठीक अछि तऽ । बच्चाक मायक की हालत अछि ?

डॉक्टर : *(किछु अटकलाक बाद)* I am sorry मैं बच्चे की माँ को बचा नहीं सका ।

[योगेश आक्रोश अवस्था मे डॉक्टरक कालर पकड़ैत अछि ।]

योगेश : इ की कहि रहल छी । डॉक्टर साहेब । *(कालर छोड़ैत)* गलती भेल, हमरा सँऽ गलती भेल डॉक्टर साहेब ।

[योगेश कानह लागैत अछि । तखनहि आरतीक मृत्यु शरीर कैं आनि आकाशक बगल मे राखि दैत अछि । योगेश आरतीक लाशक करीब जाइत अछि ।]

योगेश : भौजी आकाश अबुझनुक छल, हल्लुक छल । अहाँ तऽ बड़ गम्भीर छलहुँ । अहाँ कोना कऽ असगर छोड़ि हमरा चलि गेलहुँ । कोन मुँह लऽकए हम गाम जायब ? की कहबैक गामक लोक कैं ? कोन जबाब देबैक ? *(कानह लगैत अछि ।)*

डॉक्टर : मैं जानता हूँ ये सब जो घटना घटी है, कुछ अनहोनी सी लग रही है, पर जीवन और मृत्यु पर किसी का जोर नहीं चलता है। वो औरत जो अपने पति की मृत्यु का सदमा बर्दास्त नहीं कर सकी दिल का दौड़ा पड़ने से मृत्यु हो गयी। चमत्कारी ढंग से अपने पीछे एक लड़का जन्म दे गयी । बच्चा सही सलामत है ।

नर्स : *(बच्चा लकऽ प्रवेश)* होनी पर किसी का बस नोही चलता। होनी हो के रहेता हय । जो गया उसे लाया नहीं जा सकता। सम्हालिए इस बच्चा को उस दोनों का निशानी। ये बच्चा जरूर अपने माँ बाप पर बीते अत्याचार का बदला लेगा । जरूर बदला लेगा ।

[योगेश बच्चा के सम्हारैत अछि । जकरा निहारि-निहारि देखैत रहैत अछि । तखनहि नेपथ्य सँऽ : की देखहि गेलहुँ । एहिना होइत अछि ''कलह'' के अन्त । पारिवारिक समस्याक निवारन एहि तरहे कायल जाइत अछि । जँऽ एहि तरहे होयत तऽ निश्चित अछि एहने घटना घटत । हमरा नहि लागि रहल अछि, कुनू पाठक, (कुनू दर्शक) एहि तरहक परिणामक आशा रखने हेताह । एकटा छोट-छीन पारिवारिक मतभेद एतेक नमहर दुःखद् परिणाम सुनायत । जँऽ चाही तऽ नाटकक दू चारि टा दृश्य आरो आगा बढ़ा सकैत छी । परन्च आगाँ की होयत–ताहि सँऽ की अहाँ सब अनभिज्ञ छी । हमरा नहि लगैत अछि अनभिज्ञ होयब । इएह होयत ने—पारिवारिक सदस्य लोकनि छाती पीट-पीट कनताह । आत्म ग्लानि अनुभव करताह—उठायल अपन जिद्द आ मिथ्या स्वाभिमानक कलंकित कदम पर पछतावा करताह । पापक प्रायश्चित करैक उदय तकताह । समाजक लोक हुनका सब पर थूथू से करतन्हि । हम कहैत छी इ सब कएला सँऽ तऽ एकटा फेर ''कलह''क प्रादुर्भाव होयत । इ सब कएला सँऽ की मरल मुर्दा जीबि उठत ? इसब कएला सँऽ की एहि जनमौती बच्चाक माय बाप भेटि पेतैक जकर आँखि खुजला सँऽ पहिने जीवन अन्धकारमय भए गेलैक । एक बेर सोचू–विचार करु ''कलह'' मुक्त परिवारक गठन कोना कऽ होयत ? आऊ हम सब मिलि शपथ खाय जे आजुका बाद अपन-अपन परिवारक ''कलह'' सँऽ दूरे रहब । तऽ आऊ एहिलेल सहनशील बनू । उपकारी बनू । एक दोसरकं समस्या सँऽ अवगत होऊ । निश्चित सुखमय पारिवारक निर्माण होयत । इति शुभम् ।

पटाक्षेप

॥ समाप्त ॥

पत्राचारक पता

आनन्द कुमार झा

13/16-B, विशेश्वर बनर्जी लेन

कदमतल्ला, हावड़ा-711101

पोथी प्राप्त करबाक पता

श्री कालीकान्त झा
पूरब अपार्टमेन्ट
42, रिज रोड, मालवार हिल
बालकेश्वर, मुम्बई-6

आर. के. स्टेशनरी
शर्मा मार्केट
सेक्टर-5, नोयडा
फोन : 91-4538541

श्री शारदा नन्द झा
J-259, अर्पण बिहार
जौतपुर, नई दिल्ली-44

श्री अभयकान्त झा
बैंक ऑफ बड़ौदा
4, बेबर्न रोड, कलकत्ता-1

श्री अमरेन्द्र कुमार झा
ग्रा०+पो० - मेंहथ (दक्षिणबाड़ी टोल)
झंझारपुर, मधुबनी

श्री श्याम जी झा
सदरपुर कालोनी (खजौरी कालोनी)
सेक्टर-44, नोएडा (यू.पी.)

दिल्ली प्रदेश नवशक्ति मैथिली मंच (रजि.)
95A, अग्रनगर, प्रेमनगर-III,
नई दिल्ली-41
फोन : 518-5702